नौएडा

आज़ादी का
अमृत महोत्सव
नौएडा स्वर
अष्टम संस्करण
वर्ष 2022
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नौएडा
(सचिवालय : भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण)
ए-13, सेक्टर-1, 201301

नोएडा स्वर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नोएडा

(सचिवालय : भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण)

अंक : 8 **वर्ष 2022**

संरक्षक : **श्री संजय बंदोपाध्याय, (भा.प्र.से.)**
अध्यक्ष,
भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (कार्यालय) एवं
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नोएडा

मार्गदर्शक : **कर्नल हर्षवर्धन,**
सचिव,
भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा

संपादन एवं समन्वय : **श्रीमती प्रज्ञा कांडपाल,**
हिंदी अधिकारी, भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण एवं
सदस्य सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नोएडा

संपादक मंडल :

1. **डॉ अखिलेश कुमार मिश्रा,**
   वैज्ञानिक डी एंव राजभाषा प्रभारी,
   राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केंद्र, सेक्टर - 62, नोएडा
2. **श्री चंद्र प्रकाश,**
   हिंदी अधिकारी,
   फुटवियर डिजाइन एंड डेवलपमेंट इंस्टीटयूट, सेक्टर - 24, नोएडा
3. **श्रीमती मीनाक्षी गुलिया,**
   वरिष्ठ हिंदी सहायक,
   राष्ट्रीय होटल प्रबंध एवं केटरिंग टेक्नोलॉजी परिषद्, सेक्टर-62, नोएडा
4. **डॉ. वेद प्रकाश गौड़,**
   परामर्शदाता (राजभाषा),
   भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, सेक्टर-1, नोएडा

" पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के निजी विचार हैं। इन विचारों से संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है "।

पत्र व्यवहार का पता :- **भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण,**
ए-13, सेक्टर-1, नोएडा- 201 301

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना/विवरण	रचनाकार/संकलनकर्ता	पृष्ठ संख्या
1.	संरक्षक की कलम से		5
2.	मार्गदर्शक की कलम से		6
3.	संपादकीय		7
4.	भारत सरकार की राजभाषा नीति और हमारे दायित्व	डॉ. वेद प्रकाश गौड़	8-10
5.	प्रिय बापू सादर नमन	श्री नरेंद्र कुमार मिश्र	11
6.	गलती कहाँ हो गई	श्री अजय सिंह	12
7.	13		
8.	सही आजादी	श्रीमती मीता रानी बेहेरा	14
9.	आशा एक समाज की	सुश्री सुशीला शर्मा	15
10.	सीख	श्री बी. के. सिंह	16
11.	गुरु की महत्ता या मरतबा	मोहम्मद इमरान	17
12.	लोग	निहारिका कुमार	18
13.	एक मतवारी नार	सुश्री सोनाक्षी ढोडियाल	19
14.	कवि	श्रीमती पुष्पा रानी	20
15.	भारत सरकार की राजभाषा नीति और हमारे दायित्व	डॉ. वेद प्रकाश गौड़	
16.	नारी का अस्तित्व	श्रीमती पुजा गुप्ता	
17.	कर्मफल	श्री नरेश कुमार	
18.	डिजीटलाइजेशन का युग	सुश्री काजल	
19.	विद्याधनम	डॉ. देवकी नन्दन शर्मा	
20.	भारत का अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव	श्री सचिन सी नरवडिया	
21.	'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' मानवता के लिए अभिशाप या वरदान	श्री अविनाश कुमार	
22.	ओलंपिक खेलों में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन	श्री बीरेन्द्र सिंह रावत	
23.	जलवायु परिवर्तन का श्रमिकों पर प्रभाव	श्री राजेश कुमार कर्ण	
24.	जिंदगी खूबसूरत है	सुश्री रोजलीन हेमरोम	
25.	सदगुरु का मानव जीवन में महत्त्व	डॉ. मोहम्मद इमरान	
26.	विज्ञान एवं तकनीकी की दुनिया में राजभाषा हिंदी	श्री गणेश दत्तु काळघुगे	

संरक्षक की कलम से .....

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) की ई - पत्रिका 'नोएडा स्वर' के आठवें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार प्रसन्नता है। पत्रिका में छपे लेख, निबंध, कविताएँ और अन्य रचनाएं बहुत ही ज्ञानवर्धक है, जो व्यावहारिकता, आदर्शवाद और मानवीय परिस्थितियों की ओर हमारा ध्यानाकर्षित करती हैं। यह आप सब के सामूहिक प्रयासों का ही प्रतिफल है, इसके लिए आप सभी को हार्दिक बधाई। यह पत्रिका जहाँ विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों की लेखन प्रतिभा को उजागर करती है, वही उनके प्रकृति के प्रति प्रेम, पैनी दृष्टि और अद्यतन प्रौद्योगिकी और समग्र सामाजिक पहलुओं के प्रति उनकी सच्ची निष्ठा और जागरूकता को भी प्रकट करती है। इसके साथ ही हमारी हिंदी शब्दावली और लेखन शैली को भी परिष्कृत करती है। पत्रिका में छपे चित्र नराकास की विविध गतिविधियों की सहज झलक प्रस्तुत करते हैं।

यह भी उल्लेखनीय है कि 'नोएडा स्वर' का यह अंक राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास को दर्शाता है। मेरा आग्रह है कि प्रत्येक अंक में अधिक से अधिक कार्यालयों के अलग-अलग कार्मिकों की रचनाओं को शामिल किया जाए , जिससे नई प्रतिभाओं को भी अवसर मिल सके। मैं पत्रिका के सम्पादन मंडल और सभी रचनाकारों को भी उनके सक्रिय सहयोग के लिए साधुवाद देते हुए 'नोएडा स्वर' के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

नववर्ष की शुभकामनाओं सहित।

(संजय बंदोपाध्याय)
अध्यक्ष

मार्गदर्शक की कलम से.....

यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) की पिछली बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार, नराकास नोएडा की ई-पत्रिका 'नोएडा स्वर' के आठवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका में सम्मिलित किए गए लेखों, कविताओं और संस्मरणों के चित्रण बहुत ही ज्ञानवर्धक और यथार्थपूर्ण हैं, इसके लिए मैं सभी रचनाकारों और संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है कि इसे पढ़कर सभी के मन में राजभाषा हिंदी के प्रति लगाव बढ़ेगा और हिंदी में कार्य करने की झिझक दूर होगी।

भारत सरकार काम-काज में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासरत है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन का उदेश्य भी इससे अलग नहीं है। आशा करता हूँ आप सभी लोग इस उद्देश्य को सफल करने के लिए यथासंभव प्रयास करेंगे।

पत्रिका के सभी पाठकों को मेरी ओर से शुभकामनाएं।

(कर्नल हर्षवर्धन)
सचिव
भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा

सम्पादकीय.....

नराकास नोएडा की पत्रिका 'नोएडा स्वर' का आठवाँ अंक सभी के सार्थक प्रयासों और संपादक मंडल के सहयोग से हमारे बीच आ सका है, जिसमें प्रतिभाशाली लेखकों, विचारकों और कवियों ने खुलकर वैविध्यपूर्ण रचनाओं के माध्यम से हमारा ज्ञान बढ़ाने के साथ-साथ अपनी साहित्यिक प्रतिभा के माध्यम से हिंदी भाषा को और अधिक गौरवान्वित किया है। मैं माननीय अध्यक्ष महोदय और सभी उच्चाधिकारियों का भी उनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन के लिए हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ, जिसके अभाव में इस पत्रिका का प्रकाशन संभव नहीं हो पाता। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी आप सभी का सक्रिय सहयोग मिलता रहेगा। मैं सभी रचनाकारों का भी विशेष धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए अपने लेख / रचनाएं उपलब्ध कराई हैं।

शुभकामनाएं।

(डॉ. प्रज्ञा कांडपाल)
हिंदी अधिकारी एवं सदस्य सचिव,
न.रा.का.स. (कार्यालय), नोएडा

प्रिय बापू सादर नमन !

बापू तुम कितने अच्छे हो सकल जगत की हो तुम शान!
तुमने जीना हमें सिखाया, सत्य प्रेम का पाठ पढ़ाया,
पुलक उठे पीड़ित मन और जन जन का हो जब कल्याण,
बापू तुम कितने अच्छे हो, बापू तुम कितने सच्चे हो ! सकल जगत की शान-----

भगत पटेल और जवाहर, सुभाष चंद्र हो या सावरकर,
विचारों के प्रबल द्वंद में करुण प्रेमरस को बरसा कर,
शत्रु ह्रदय भी जीता तुमने, दिनकर करते तब यश गान,
बापू तुम कितने अच्छे हो, बापू तुम कितने सच्चे हो ! सकल जगत की शान-----

जाति-पाति का द्वंद हटाकर, छुआछूत का भेद मिटाकर,
तुमने दुर्जन को जब साधा, सज्जन भी करते सम्मान,
बापू तुम कितने अच्छे हो, बापू तुम कितने सच्चे हो ! सकल जगत की शान-----

गांधीवाद का मंत्र बनाकर, विश्व बंधु-सा पाठ पढ़ा कर,
मंडेला के कंटक पथ को करते तुम बिल्कुल आसान,
बापू तुम कितने अच्छे हो, बापू तुम कितने सच्चे हो ! सकल जगत की शान-----

पथ से जब यूं हम भटके हैं, डर लगता है तुम रूठे हो,
बारंबार मैं तुम्हें मनाऊं, कर्मध्वजा मैं यूं फहराऊँ,
स्वच्छ बनू और स्वच्छ बनाऊं गांधी दर्शन में फैलाऊँ,
गर्वित हूं मेरा तन मन जब बढे देश का तब अभिमान,
बापू तुम कितने अच्छे हो, बापू तुम कितने सच्चे हो ! सकल जगत की शान-----

श्री नरेंद्र कुमार मिश्र
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कर्मचारी राज्य बीमा निगम मॉडल अस्पताल, नोएडा

गलती कहाँ हो गई

समझ नहीं आ रहा,
गलती कहाँ हो गई ।
बचपन से पढ़ाई की,
बड़ों का सम्मान किया ।
माता पिता की बात सुनी
कभी भी न परेशान किया ।
समझ न आया फिर भी,
गलती कहाँ हो गई ।

खूब काम किया,
तब भी एक-एक पैसे को मोहताज हुए ।
समझ न आया फिर भी,
गलती कहाँ हो गई ।

जीवन हमारा कब सब की तरह होगा ।
आकाश हमें भी छूना है,
खूब खुश रहना है,
पूरी दुनिया घूमना है।
गलती कहाँ हो गई पता नहीं,

फिर भी खुश रहना और आगे जाना है,
दुनिया से दूर, अलग दुनिया बनाना है,
अलग पहचान बनानी है,
और फिर न कहे, “गलती कहाँ हो गई”।

अजय सिंह
एस ई ओ,
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा

'सही आजादी'

चिर नमन उन वीरों को
जिन्होंने अपने प्राण गंवाए हैं
देश को आजादी दिलाकर
नवयुग के नव दीपक जलाएं हैं।

अवतरित हुई नव चेतना
तिमिर रूपी आवरण हटा
नव तरुण अरुण का उदय हुआ ज्यों
परिदीप्त हुई धरा, बिखरी किरणों की छटा ।

उन्मुक्त गगन, उन्मुक्त पवन
उन्मुक्त आज जीवन है
वीरों की शहादत से सिंचित
आज धरती मा का प्रांगण है।

पर न जाने क्यों मन है आज डरा-डरा
समाज में फैली विषमता को देख
दूर सिमटा-सा कोने में खड़ा
बिना बात के खून की नदियां आज है बह रहीं
कहीं लाशों के ढेर तो कहीं माँ-बहने यातनाएं हैं सह रहीं.....
हर इक ओर डर और आतंक-सा छाया है.....
सफेद पुतले में लिपटा हर इक इंसान मानो इक काला साया है।

ओफ! यह कैसी आजादी है?...
जो घोल रही विष, स्नेह रिक्त मन में
भर रही डर आज इस शांत भुवन में
उस दिन लोगों ने खून की असली कीमत पहचानी थी,
जिस दिन सुभाष ने सबसे मांगी कुर्बानी थी,
आज उस जोश और जज्बे को आगे लाना है,
बैर भाव भूलकर सबको गले लगाना है,
तभी सही मायने में 'आजादी' आएगी।
धरती माँ फिर से मुस्कराएगी ||

मीता रानी बेहेरा
सहायक निदेशक (राजभाषा),
नवोदय विद्यालय समिति (मुख्यालय), नोएडा

गलती कहाँ हो गई

समझ नहीं आ रहा,
गलती कहाँ हो गई ।
बचपन से पढ़ाई की,
बड़ों का सम्मान किया ।
माता पिता की बात सुनी
कभी भी न परेशान किया ।
समझ न आया फिर भी,
गलती कहाँ हो गई ।

खूब काम किया,
तब भी एक-एक पैसे को मोहताज हुए ।
समझ न आया फिर भी,
गलती कहाँ हो गई ।

जीवन हमारा कब सब की तरह होगा ।
आकाश हमें भी छूना है,
खूब खुश रहना है,
पूरी दुनिया घूमना है।
गलती कहाँ हो गई पता नहीं,

फिर भी खुश रहना और आगे जाना है,
दुनिया से दूर, अलग दुनिया बनाना है,
अलग पहचान बनानी है,
और फिर न कहे, "गलती कहाँ हो गई"।

अजय सिंह
एस ई ओ,
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा

'सही आजादी'

चिर नमन उन वीरों को
जिन्होंने अपने प्राण गंवाए हैं
देश को आजादी दिलाकर
नवयुग के नव दीपक जलाएं हैं।

अवतरित हुई नव चेतना
तिमिर रूपी आवरण हटा
नव तरुण अरुण का उदय हुआ ज्यों
परिदीप्त हुई धरा, बिखरी किरणों की छटा ।

उन्मुक्त गगन, उन्मुक्त पवन
उन्मुक्त आज जीवन है
वीरों की शहादत से सिंचित
आज धरती मा का प्रांगण है।

पर न जाने क्यों मन है आज डरा-डरा
समाज में फैली विषमता को देख
दूर सिमटा-सा कोने में खड़ा
बिना बात के खून की नदियां आज है बह रहीं
कहीं लाशों के ढेर तो कहीं माँ-बहने यातनाएं हैं सह रहीं.....
हर इक ओर डर और आतंक-सा छाया है.....
सफेद पुतले में लिपटा हर इक इंसान मानो इक काला साया है।

ओफ! यह कैसी आजादी है?...
जो घोल रही विष, स्नेह रिक्त मन में
भर रही डर आज इस शांत भुवन में
उस दिन लोगों ने खून की असली कीमत पहचानी थी,
जिस दिन सुभाष ने सबसे मांगी कुर्बानी थी,
आज उस जोश और जज्बे को आगे लाना है,
बैर भाव भूलकर सबको गले लगाना है,
तभी सही मायने में 'आजादी' आएगी।
धरती माँ फिर से मुस्कराएगी ॥

मीता रानी बेहेरा
सहायक निदेशक (राजभाषा),
नवोदय विद्यालय समिति (मुख्यालय), नोएडा

आशा एक समाज की

आशा करता हूँ एक ऐसे समाज की,
जो समस्त बुराइयों से दूर होगा,
जनता जिसकी सरकार होगी
नेता स्वयं मजदूर होगा ।

न होगा अमीर गरीब में भेद भाव,
न जात न किसी धर्म का होगा,
सबको मिलेंगे समान अवसर,
यही हमारा धर्म होगा ।

अनपढ़ का नाम न होगा,
पढ़ा लिखा हर इंसान होगा,
न फिर साहूकार जनता को ठगेगा,
न गरीब पर जुल्म होगा ।

रिश्वत का नाम हमें मिटाना होगा,
सिफ़ारिश को दूर भगाना होगा,
होगी जिसमें अच्छी योग्यता,
उसी को आगे जाना होगा ।

युवा वर्ग गिरा जिस खाई में,
उसको उपर उठाना होगा,
ड्रग्स इत्यादि के सेवन से,
उनको हमें बचाना होगा ।

हमे इन सपनों को
अब हकीकत में बदलना होगा
समाज के इस अंधविश्वास को,
अपनी बुद्धि से कुचलना होगा |

सुशीला शर्मा
एस एस ए,
नवोदय विद्यालय समिति (मुख्यालय), नोएडा

सीख

संध्या बेला झील किनारे,
बरगद पेड़ के नीचे,
ध्यानमग्न, किसी गूढ़ बातों में,
बैठा आँखे मीचे ।

तभी झुंड छोटी चिड़ियों का,
आया दूर कहीं से,
पत्ता-पत्ता, डाली-डाली,
बैठी फुदुक-फुदुक के ।

चीं-चीं, चीं-चीं, चीं-चीं, चीं-चीं,
कर रही सभी एक स्वर से,
लगी होड़ थी कहने की,
बातें एक दूसरे से ।

क्या कहती थी, क्या थी बातें,
कुछ भी समझ न आया,
पर, खग के इस कोलाहल ने
एक रमणीक गोधूलि लाया ।

था उलझन में, किस राग से,
शोर -संगीत यह आया,
लगा ध्यान फिर परम पिता का,
तभी संदेशा पाया ।

जाओ कहीं, करो कुछ भी,
एक पहर घर आओ,
मिल - बैठ कर, एक दूसरे की,
सुन लो, और सुनाओ ।

एक साथ बातें करने से,
द्वेष-कलह मिटता है,
स्नेह, श्रद्धा के विनिमय से
प्रेम - भाव बढ़ता है ।

एक साथ चिल्लाने से,
संगीत निकल सकता है,
इतना तो, रे मानव तू,
चिड़ियों से सीख सकता है ।

बी. के. सिंह
कार्या. अधी./ए. एस. ओ. स्था. 1, नवोदय विद्यालय समिति (मुख्यालय), नोएडा

गुरु की महत्ता या मरतबा

क्या बतायें महत्व और मरतबा गुरु महाराज का
है हंदिशों और पुराणों में अक्सर वर्णन गुरु महाराज का ||

देवदूत भेजे गए शिक्षा देने के लिए
इसको कहते हैं प्राकृतिक सिलसिला गुरु महाराज का ।

समृद्धि एवं सफलता अगर प्राप्त करता है कोई
क्या बतायें बढ़ता है कितना हौसला गुरु महाराज का ।

शिक्षा के जरिए इमरान को मिला है जो मान सम्मान
देन है सब उसी विद्यालय और गुरु महाराज का ।

मोहम्मद इमरान
प्रयोगशाला तकनीशियन,
राष्ट्रीय जैविक संस्थान, नोएडा

लोग

कितने खट्टे, मीठे लोग
जितने सच्चे, तीखे लोग

अंदर कितने चुप - चुप है
ये बैठे हुए गुम-सुम लोग

आवारा कहते थक गए
मुझे ये, वो और तुम लोग

सारा जहाँ पागलखाना
सारे लोग, दीवाने लोग

वक्त-वक्त पे परखे मुझको
मेरे अपने और बेगाने लोग

मेरे लहजों से उलझे रहते
कब शब्दों को पहचाने लोग

सफेद पोश की क्या कहें
सच्चे झूठे और फीके लोग

उनकी खसलत बोलो जी
जो मयखाने जा पीते लोग

जाति धर्म और क्या-क्या
अच्छे - अच्छे सस्ते लोग

अंदर की बात तुम क्या जानो
कितने हंसते हैं ? हंसते लोग

सब के सब सियाने प्रतिभा
और हम ठहरे दीवाने लोग

निहारिका कुमार
हिन्दी सहायक,
राष्ट्रीय जैविक संस्थान, नोएडा

एक मतवारी नार

मैं हूँ एक मतवारी नार
कृष्ण की बांसुरी-सी
राधा बावरी-सी

मस्तक सजाकर
सुबह की लाली
ओढ़ चुनरिया
धुप किनारी वाली
समा जाती मैं
कवियों की कविता में
मै कई बार
मै तो हूँ एक मतवारी नार

धवल देह मेरी
चांदनी से सराबोर
नयन रहते सदा दीप्यमान
मुखमंडल पर होती भर
जैसे दमके कोई अंगार
रौशन करती हुई ये संसार
मैं तो हूँ एक मतवारी नार

चाहतो से सजी मेरी चुनर
आशाओं की लड़ियाँ जिसमें
ख्वाब सजे पलकों पर मेरी
ढूढूँ खुशियां सबकी इनमें
वात्सल्य से बुनकर
अपने आँचल का तार-तार
मुस्करा कर सजाती
अपना घर आँगन द्वार

मैं हूँ ऐसी एक मतवारी नार.....

सोनाक्षी ढोडियाल
डाटा प्रविष्टि प्रचालिका,
राष्ट्रीय जैविक संस्थान, नोएडा

कवि

कविता लिखना,
कवि का कर्म है,
और,
उन्हें सुनाकर लोगों को,
खुश करना उसका धर्म है,
कवि को बस,
एक कवि ही समझ सकता है,
लोग कहते है,
ये न जाने क्या नुमाईश
करता है,
कवि लोगों को खोजता है,
कवि के मन को,
लोग समझ नहीं पाते है,
और इसलिए, सारे लोग,
कवि नहीं बन पाते है,
कवि अपने भावों को,
कलम के सहारे,
कागज के आंगन में,
बिखेरकर सजाता है,
और नए-नए,
शब्दों के बहाने,
अपने आंगन को,
कवि की कलम में,
वो ताकत है,
जो सब कुछ कह जाती है,
जब जुबां होते हुए भी,
बेजुबां हो जाती है,
कवि का ह्रदय,
भावों से भरा होता है,
कभी गम की धूप,
और,
खुशी की छाया से,
खिला होता है,
वे अपने भावों को,
कलम व शब्दों के सहारे,
आपके लिए लिखता है,
क्योंकि,
वे खुद से ज्यादा,
आपको अजीज समझता है,

पुष्पा रानी
सहायक,
सॉफ्टवेयर टेक्नालजी पार्क्स ऑफ़ इंडिया, नोएडा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) नोएडा की 43वीं बैठक दिनांक 07.09.2022 को राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केंद्र में आयोजित की गई।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नोएडा की 43वीं बैठक दिनांक 07.09.2022 को राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केंद्र, सेक्टर – 62, नोएडा के सौजन्य से आयोजित की गई।

प्रतिभा पुरस्कार 2021 प्राप्त करते हुए विद्यार्थी

नराकास (नोएडा) की 43 वीं बैठक के दौरान प्रतिभा पुरस्कार 2021 से पुरस्कृत छात्र-छात्राएं

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नोएडा के तत्वाधान में वी.वी.गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नोएडा के सौजन्य से हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन 16 दिसंबर 2022 को किया गया।

भारत सरकार की राजभाषा नीति और हमारे दायित्व

जिस प्रकार किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र के लिए उसका ध्वज, प्रतीक चिह्न और राष्ट्रगान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होते है, उसी तरह हर स्वतंत्र राष्ट्र की अपनी राष्ट्रभाषा या राजभाषा होती है, जो अपने राष्ट्र के विभिन्न राज्यों के बीच संपर्क का माध्यम बनती है और राष्ट्र की भावना को लेकर चलती है तथा राष्ट्र को एक सूत्र में बांधती है। यही हमारे सर्वांगीण विकास का आधार बनती है। प्राचीन काल से ही यानी रिग्वैदिक काल से संस्कृत इस देश की संपन्न भाषा रही है। इसको सभी भारतीय भाषाओं की जननी कहा जाता है और इसकी लिपि देवनागरी है। लेकिन भाषा की यह खासियत होती है कि वह समय, परिवेश और परिस्थितियों के अनुसार अपना रूप बदलती रहती है। हमारी प्राचीन भाषा संस्कृत भी वैदिक, संस्कृत से लौकिक संस्कृत और उसके बाद पालि, प्राकृत, अवहट और अपभ्रंश से होती हुई, देवनागरी लिपि के साथ हिंदी खड़ी बोली के रूप में हमारे सामने उपस्थित है, जो लगभग 800 वर्षों से भी अधिक समय से राष्ट्र की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी हुई है। पहले हमारे देश में विभिन्न रियासतों का शासन चलता था और यह देश सोने की चिड़िया कहलाता था तथा यहां के प्रख्यात विश्वविद्यालयों जैसे नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला आदि में विदेशों से भी छात्र अध्ययन के लिए आते थे जिन्हें संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा तिब्बती भाषा में शिक्षा देने का प्रावधान था।

लेकिन सातवीं शताब्दी से भारत में विदेशी आक्रांताओं ने न केवल यहां की धन संपत्ति को लूटा, अपितु यहां की भाषा और संस्कृति को भी नष्ट किया, चाहे वह मुस्लिम शासन हो या अंग्रेजी शासन, लेकिन फिर भी हिंदी ने इस देश की एकता और संस्कृति को बरकरार रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और परिणामस्वरूप दोनों ही समय, भले ही राजभाषा फारसी या अंग्रेजी रही हो, आम जनता से संपर्क हिंदी में ही होता था। यद्यपि पहले जब भी अंग्रेज उच्चाधिकारी भारत आते थे, तो उन्हें हिंदी सीखने के लिए तीन किताबें पढ़नी होती थी और उनके लिए हिंदी और क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान प्राप्त करना जरूरी होता था, ताकि वे भारत और भारत के लोगों को अच्छी तरह समझ सकें। लेकिन अठारह सौ सत्तावन के स्वतंत्रता संग्राम के बाद अंग्रेजों ने न्यायालयों, विश्वविद्यालयों, सरकारी दफ्तरों आदि सब जगह अंग्रेजी थोपना आरंभ कर दिया था। यहां तक कि हिंदू और मुसलमानों में हिंदी और उर्दू को लेकर फूट डालकर, दोनों में विभाजन की दरार डालकर देश को कमजोर करना शुरू कर दिया, ताकि वे लंबे समय तक भारत में अपना आधिपत्य जमाए रख सकें। लॉर्ड मैकॉले ने तो 2 फरवरी, 1835 को ही ब्रिटिश पार्लियामेंट में भाषा को लेकर एक सर्वेक्षण रिपोर्ट प्रस्तुत कर इस बात पर जोर दिया गया कि इन भारतीयों के लिए आरंभ से ही अंग्रेजी शिक्षा अनिवार्य कर दी जाए ताकि ये अपने स्वाभिमान और मातृभूमि के प्रेम को भूल जाएं और सदैव-सदैव के लिए अंग्रेजों के गुलाम बन जाए। इसे ध्यान में रखते हुए कक्षा एक से ही अंग्रेजी शिक्षा देना शुरू कर दिया गया और आज हम अपनी भाषा और संस्कृति से विमुख होते जा रहे हैं ।

अंग्रेजी शासन के शोषण के विरुद्ध बीसवीं सदी में 1915 में गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका से लौट आने पर गांधीजी इस बात को भांप गए थे कि लंबी गुलामी के बाद अब पुनः दीन-हीन हुए स्वाभिमानी भारतीयों में पुनः अपनी भाषा, संस्कृति और राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान जाग्रत करने की आवश्यकता है, जिसके लिए उन्होंने स्वराज, स्वभाषा और स्वाभिमान को जगाने के लिए सभी वर्गों को एकजुट करने की सख्त आवश्यकता है। गांधीजी का मानना था कि राज्यों में सभी सरकारें अपनी-अपनी भाषा में कार्य करें तथा संघ सरकार की भाषा हिंदी होनी चाहिए ताकि सभी भारतीय भाषा-भाषी मिलकर भारतीय संस्कृति का विकास कर सकें और हिंदी सभी राज्यों के बीच संपर्क सूत्र का कार्य कर सकें, जिससे पूरे राष्ट्र में भावनात्मक और राष्ट्रीय चेतना जाग्रत हो सके । राज्यों में शिक्षा का माध्यम वहां की भाषा होनी चाहिए ताकि छात्र-छात्राएं ज्ञान को अपनी भाषा में आत्मसात कर सकें, जो उनके परिवार और आस-पड़ोस में बोली जाती है। गांधी जी का मानना था कि ऐसी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाना होगा, जो अधिकतर भू-भाग द्वारा बोली जाती है और समूचे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसे सीखना सरकारी कर्मचारियों और आम जनता के लिए आसान हो और भाषा हमारी सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्ति दे सके। अंग्रेजी कभी हमारी राष्ट्र भाषा नहीं बन सकती क्यूंकि यह देश के कुछ ही लाख लोगों की भाषा है और उनकी संख्या हमेशा लाखों में ही रहेगी; जबकि हिंदी करोड़ों गरीबों, ग्रामीणों और दलितों की भाषा है, जिन पर अंग्रेजी लादना, उन्हें गुलाम बनाने के समान होगा और वे सभी कभी अंग्रेजी सीख भी नहीं पाएंगे। गांधी जी के हिंदी प्रेम का सभी नेताओं ने सम्मान किया और कोने-कोने से हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की आवाज गूंजने लगी।

अतः आजादी मिलने के बाद संविधान सभा ने काफी व्यापक बहस के बाद 14 सितंबर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान करने का निर्णय लिया तथा भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को मान्यता दी गई ।

26 जनवरी, 1950 को भारत के संविधान के लागू होते ही इसकी धारा 343 के अनुसार, देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया और भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को मान्यता दी गई, लेकिन साथ में यह भी छूट दी गई कि 15 वर्षों तक यानी 26 जनवरी 1965 तक केंद्र सरकार का कार्य वैसे ही चलता रहेगा जैसा आजादी

से पहले चलता था। साथ में यह भी प्रावधान किया गया कि राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी से संसद में संकल्प लाने का भी प्रावधान रखा गया था और आवश्यकतानुसार अंग्रेजी और देवनागरी अंको को आगे भी वांछित अनुसार जारी रखा जा सकेगा।

1960 के दशक के आते ही तमिलनाडु, बंगाल और पंजाब में हिंदी को लेकर हिंदी विरोधी आंदोलन भी हुए और तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने आश्वासन दिया कि हिंदी किसी पर थोपी नहीं जाएगी फिर भी, राजभाषा संबंधी प्रावधानों के अनुसार संविधान लागू होने के 5 वर्ष बाद और 10 वर्ष बाद राजभाषा आयोग का गठन किया जाएगा। आजादी से पूर्व गांधी जी ने भी हिंदी को विविध भारतीय भाषाओं के बीच की कड़ी के रूप में इस्तेमाल करने पर जोर दिया तथा उन्होंने खादी को राष्ट्रीयता तथा हिंदी को राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बताते हुए पूरे देश को एकजुट किया था। उन्होंने हिंदी साहित्य सम्मेलन तथा तत्कालीन कांग्रेस के अधिवेशनों में हिंदी या भारतीय भाषाओं के उपयोग पर बल दिया तथा 1930 - 1947 के बीच सभी राज्यों में राष्ट्रभाषा समिति, हिंदी पीठ, हिंदी परिषद् की स्थापना की। उन्होंने 1918 में इंदौर में आयोजित आठवें साहित्य सम्मेलन में लिए निर्णय को कार्यरूप देने के लिए चेन्नई में 2018 में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना की तथा उत्तर भारत के हिंदी प्रेमी विद्वानों को दक्षिण में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए भेजा, जिन्होंने वहां कर्मठता के साथ हिंदी का प्रचार-प्रसार किया और आज वही दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा एक मानद विश्वविद्यालय के रूप में राष्ट्रीय महत्व के संस्थान की हैसियत से हर वर्ष लाखों छात्रों को प्रमाण पत्र और डिग्री प्रदान कर हिंदी का ज्ञान प्रदान कर रही है। इस प्रकार आजादी की लड़ाई में अन्य भारतीय भाषाओं के बीच हिंदी ने सेतु की भूमिका निभाई और राष्ट्रीय एकता का संवर्धन करती रही। अतः राजभाषा आयोग गठित करने का निर्णय लिया गया, जिसमें देश की विभिन्न राज्य भाषाओं के विद्वानों को राष्ट्रपति द्वारा नामित किया गया। आयोग ने अपनी रिपोर्ट 08 फरवरी 1957 को प्रस्तुत की और आयोग की सिफारिशों पर विचार करने हेतु अप्रैल 1960 में राष्ट्रपति आदेश जारी किये गए, जो संसदीय राजभाषा समिति, जिसमें प्रावधानों के अनुरूप लोकसभा के 20 और राज्यसभा के 10 सदस्य थे, की अनुशंसाओं को ध्यान में रखा गया । काफी सोच विचार के बाद निर्णय लिया गया कि हिंदी किसी पर थोपी नहीं जाएगी, लेकिन किसी को भी कोई अड़चन न आए, इस दृष्टि से हिंदी का उत्तरोत्तर विकास अवश्य किया जाएगा।

26 मई, 1963 को राजभाषा अधिनियम पारित किया गया, जिसे 1967 में संशोधित किया गया, जिसमें यह प्रावधान किया गया कि महत्वपूर्ण दस्तावेज जैसे सभी सामान्य आदेश, अनुदेश, परिपत्र, निविदा सूचना, विज्ञापन, संधि, करार, लाइसेंस, अनुज्ञप्ति आदि अनिवार्यतः द्विभाषी रूप में जारी किए जाएंगे और अनुवाद की जिम्मेदारी हिंदी अनुवादकों की होगी न कि विभिन्न अनुभागों / प्रभागों के कर्मचारियों की। यह भी छूट दी गई कि कोई भी कर्मचारी/अधिकारी टिप्पण- मसौदा हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकेगा लेकिन लोकसभा, राज्यसभा और विधानसभा के बिल/विधेयक और विधिक प्रक्रिया आदि अंग्रेजी में ही होगी, जिसका अनुवाद हिंदी में कराया जाना जरूरी होगा ।

1960 में राष्ट्रपति आदेश जारी किए गए और उसमें हिंदी सिखाने, हिंदी टंकण और आशुलिपि तथा प्रक्रिया साहित्य और विधिक साहित्य के अनुवाद हेतु कार्यवाहियों के लिए हिंदी शिक्षण योजना, हिंदी निदेशालय, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, शब्दावली आयोग तथा विधिक अनुवाद हेतु विधि प्रभाग तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की व्यवस्था की गई ताकि तकनीकी, विधिक और शब्दावली में एकरूपता सुनिश्चित की जा सके ।

1968 में राजभाषा संकल्प पारित किए गए, जिसके अनुसार गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग प्रत्येक वित्त वर्ष के आरंभ में हिंदी के विकास के लिए एक गहन और व्यापक कार्यक्रम जारी करेगा और प्रेम, सद्भाव और प्रेरणा के साथ, उन लक्ष्यों को हासिल करना प्रत्येक कार्यालय की जिम्मेदारी होगी । हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं के विकास के लिए केंद्र सरकार अपेक्षित अनुदान भी प्राप्त प्रदान करेगी ।

केंद्र सरकार में त्रिभाषा फार्मूले के तहत हिंदी भाषियों के लिए हिंदी अंग्रेजी के साथ दक्षिण भारत की एक आधुनिक भाषा और दक्षिण भारत के कार्मिकों के लिए मातृभाषा और अंग्रेजी के अलावा हिंदी सीखने का प्रावधान किया गया और उनके लिए हिंदी भाषा हिंदी टंकण और आशुलिपि सीखने के लिए प्रोत्साहन योजना भी लागू की गई। संघ लोक सेवा आयोग की केंद्रीय सेवाओं के साक्षात्कार परीक्षा में हिंदीतर भाषियों के लिए हिंदी/अंग्रेजी/मातृभाषा में बोलने और हिंदी /अंग्रेजी में परीक्षा देने की छूट दी जाएगी । जहां पदों की दृष्टि से हिंदी अंग्रेजी दोनों का होना अनिवार्य न हो ।

हिंदी का उत्तरोत्तर विकास इस प्रकार किया जाएगा कि देश की औद्योगिक और वैज्ञानिक प्रगति तथा सांस्कृतिक विकास पर कोई प्रतिकूल असर न पड़े । संसदीय समिति ने 8 फरवरी, 1959 को अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को प्रस्तुत की तथा मोटे तौर पर सिफारिश की गई कि 26 जनवरी 1965 के बाद भी सह-राजभाषा के रुप में अंग्रेजी का उपयोग जारी रहना चाहिए । समिति ने अखिल भारतीय सेवाओं और उच्चतर केन्द्रीय सेवाओं में भर्ती के लिए परीक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी जारी रह सकती है और हिंदी को वैकल्पिक भाषा के रूप में रखा जाना चाहिए । इस पर 2 से 4 सितंबर 1959 तक लोकसभा में एवम 8 -9 सितंबर 1959 तक राज्यसभा में काफी बहस हुई ।

राजभाषा नियमावली,1976 यथा संशोधित 1987 को पारित किया गया और राज्यों में हिंदी के उपयोग को ध्यान में रखते हुए पूरे देश को "क" (पूरी तरह हिंदीभाषी) "ख" (हिंदी का ठीक-ठाक ज्ञान रखने वाले) और "ग" (जहां हिंदी कम ही लोग जानते हैं) मे रखा गया और वहां लोगों के ज्ञान के अनुसार, हिंदी पत्राचार और हिंदी टिप्पण, हिंदी टाइपिंग और आशुलिपि के लक्ष्य आदि निर्धारित किए गए। राज्यों के बीच आपसी पत्राचार और केंद्र सरकार और राज्यों के बीच हिंदी पत्राचार की व्यवस्था या हिंदी के साथ अंग्रेजी अनुवाद भेजने की अनिवार्य व्यवस्था की गई। केंद्र सरकार के क,ख,ग क्षेत्र में स्थित कार्यालयों के लिए पत्राचार के लक्ष्य भी अलग-अलग रखे गए । हिंदी में प्राप्त या हस्ताक्षरित पत्रों के जवाब अनिवार्यतः हिंदी में देने और राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के तहत आने वाले कागजात द्विभाषी रूप में जारी करना अनिवार्य किया गया तथा हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान ,प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों से सरकारी कार्य हिंदी में करने की अपेक्षा की गई तथा सभी कोड, मैनुअल और प्रक्रिया साहित्य द्विभाषी रूप से मुद्रित कराने का प्रावधान किया गया । प्रत्येक कार्यालय प्रधान को दायित्व दिया गया कि वह सुनिश्चित करें कि सभी राजभाषा संबंधी नियमों और प्रावधानों का विधिवत अनुपालन सुनिश्चित हो और इसके लिए जरूरी उपाय किए जाएं तथा कार्यालयों और अधिकारियों को इसके लिए समय-समय पर निर्देश जारी किए जाएं ।

डॉ. वेद प्रकाश गौड़
परामर्शदाता (राजभाषा),
भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा

नारी का अस्तित्व

जब से सृष्टि की रचना हुई है, तब से ही शायद हम नारी को सशक्त करने की बात सोच रहे हैं। वह शायद इसलिए क्योंकि प्रकृति ने नारी को कोमल, ममतामयी, करुणामयी, सहनशील आदि गुणों से भरपूर बनाया है। यह हम सब देख रहे है कि नारी अब धीरे-धीरे सशक्त और सबल बनती जा रही है। सबसे पहले हम सब अपने अस्तित्व, अपने वजूद की बात करें तो हमें बनाने वाली कौन है? स्वयं एक नारी। ईश्वर ने सृजन शक्ति पृथ्वी और नारी को ही प्रदान की है।

नारी हर रूप में एक शक्ति है। वह बालक रूप में पुरुष को जन्म देती है और उसका पालन करती है (एक मां के रूप में), आजीवन उसका साथ देती है (एक पत्नी के रुप में) जिम्मेदार बनाती है, सोचने का नजरिया बदलती है, (एक बेटी के रूप में) और जीवन को आलंबन देती है (पुत्र वधू के रूप में)।

अर्थात् जीवन के हर पड़ाव में, हर रिश्ते में वह सशक्त है। नारी के लिए जन्म से पहले ही जीवन के लिए संघर्ष आरम्भ हो जाता है। किसी पुरुष के जीवन में शायद ही ऐसा होता हो। उसके बाद तो चुनौतियों का जो दौर शुरू होता है वह आजीवन चलता ही रहता है। आज भी स्त्री जाति को कई जगह उतना मान-सम्मान, पालन - पोषण और संरक्षण नहीं मिल पाता, जितने की वह हकदार है। अपने मनपसंद करियर का चुनाव करने से पहले एक नारी को बहुत से पहलुओं को ध्यान में रखना पड़ता है इसलिए कई बार वह चाहकर भी अपने मन की इच्छा पूरी नहीं कर सकती। अपनी प्रतिभा के अनुसार अवसर या तो उसे मिलते है या मिलते ही नही , जिसके लिए कई बार उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है, जो उसके नारी होने के अपराध जैसे ही होता है। समाज में अपने आप को स्थापित करने के लिए उसे बहुत-सी मुसीबतों और बड़े-बड़े चक्रव्यूहों का सामना करना पड़ता है और यदि आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त हो भी जायें तो परिवार को मनाने की चुनौती उसके सामने आ खड़ी होती है। नारी जीवन वास्तव में ही चुनौतियों का भंडार है। नारी जीवन तो जन्म से पहले से लेकर मृत्यु तक चुनौतियों से ही भरा हुआ है। अत:नारी जीवन इतना आसान नहीं है।

फलत: आज नारी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है । विज्ञान व तकनीकी सहित लगभग सभी क्षेत्रों में उसने अपनी उपयोगिता सिद्ध की है। उसने समाज व राष्ट्र को यह सिद्ध कर दिखाया है कि शक्ति अथवा क्षमता की दृष्टि से वह पुरुषों से किसी भी भाँति कम नहीं है। वह दिन दूर नही हैं जब भारतीय नारी अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करने में सफल हो जाएगी। अंत में सिर्फ यही कहना चाहूंगी कि-

" माना कि पुरुष बलशाली है, पर जीतती हमेशा नारी है।
सांवरिया के छप्पन भोग पर, सिर्फ एक तुलसी भारी है"।।

पूजा गुप्ता
राष्ट्रीय होटल प्रबंध केटरिंग टेक्नोलॉजी परिषद्
सेक्टर – 62 , नोएडा

कर्मफल

हम जो भी कर्म करते है, वह हमारे लिए न केवल दीर्घ काल तक प्रभावी होता है अपितु कभी-कभी उसकी परिणीति एक जन्म में पूर्ण नहीं हो पाती पुनः किसी भी कर्म के लिए एहसास, आशय एवं परिस्थितियों महत्वपूर्ण होती हैं कर्म फल का गूढ़ अर्थ समझने के लिए हमें किस प्रकार के तीन तरह के कर्म होते हैं, समझना जरूरी है।

1. संचित कर्म:

संचित कर्म बिना किसी आशय के ही प्राप्त होते हैं। माहौल सभी पर प्रभाव डालता है यहाँ तक कि जिस प्रकार बुरे व्यक्ति की संगति, किसी भी व्यक्ति पर प्रभाव डालती है उसी प्रकार किसी व्यक्ति का बुरा या अच्छा आचरण भी प्रभावित करता है। यदि यह संगति इच्छा से नहीं की गयी हो तो यह संगति हमारे अवचेतन पर बहुत हल्की एवं कमजोर छाप छोड़ती है परन्तु यदि सब कुछ जानते हुये भी ऐसा किया गया हो तो इसका प्रभाव हमारे अवचेतन पर अमिट छाप छोड़ता है।

संचित कर्म का दूसरा उदाहरण अनिच्छा या किसी दवाब में किया गया कर्म है। कर्ता किसी कर्म को यदि दबाब में नहीं हो तो नही करेगा। ऐसे किये गए संचित कर्मों के कर्मफल बिना, किसी प्रतिफल के दीर्घ काल तक पड़े रहने के फलस्वरूप मंद पड़ जाते हैं। पर यदि बाद में ऐसे कर्म इच्छा से किये जाएं तो ऐसे कर्म पुनर्जीवित हो जाते हैं एवं परिणाम में परिवर्तित हो जाते हैं और भी यह कि अच्छे एवं बुरे संचित कर्म, परिणाम में परिवर्तित हो जाते हैं तथा आशय एवं परिस्थिति के अनुसार सफल भी हो जाते हैं ।

2. प्रारब्ध कर्म:

प्रारब्ध कर्म, ऐसे कर्म होते है जो इच्छा एवं पूर्ण जानकारी होते हुये एवं आशय से किये गये हो। हमारे अवचेतन पर ऐसे कर्मों की छाप बहुत प्रभावी होती है। विशेष तौर से यदि वे नकारात्मक हों । हमारी अर्न्तरात्मा, (जागरूक अवचेतन) एक न्यायाधीश के अनुसार कार्य करती है एवं प्रारब्ध के लिए तुरन्त परिणाम तैयार करने लगती है । जीवात्मा के कर्म फल से मेच कर सकने वाली समुचित परिणीति तैयार करने में कभी-कभी एक से अधिक जीवन काल की अवधि की आवश्यकता होती है । यदि कोई हत्यारा न्यायालय को धोखा देकर छूटने में कामयाब हो जाता है तो भी उसकी अर्न्तरात्मा, उसके लिए न्याय करेगी एवं वृक्ष के बीज की तरह से पाप विस्तार पाता रहेगा तथा समुचित परिणीति के लिए खोज करेगी। इस समयावधि मे जीवात्मा, उसके किन्हीं अन्य पूर्व अच्छे पुण्य कर्मों के प्रतिफल स्वरूप, अच्छा समय बिताती रह सकती है। देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान में बुरे कर्म करने पर भी उसका समय अच्छा क्यों बीत रहा है? इसलिए हमें किसी भी कुपात्र / बुरे व्यक्ति को सुखी देखकर निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए एवं ऐसा सोचते हुये कि जो भी परिणाम इस जीवन में हमें प्राप्त हो रहे है ये सब प्रारब्ध के फलस्वरूप हैं, हमें अच्छे कर्मों में निमग्न रहना चाहिए एवं अपने भाग्य या फिर भगवान को इसके लिए दोषी नहीं ठहराना चाहिए। ये हमारे पूर्व कर्मों या फिर कभी-कभी बहुत भूतपूर्व में किये गये कर्मों की परिणीति हो सकती है, जिनका हमें आभास नही होता है महाभारत युध्द के दौरान अर्जुन के बाणों से बिंधे हुये पितामह भीष्म जब शर शैया पर पड़े हुये थे तो उन्होने भगवान कृष्ण से पूछा "हे केशव, मुझे अपने पूर्व सौ जन्मों की स्मृति है एवं मेरी स्मृति के अनुसार मैंने पूर्व सौ जन्मों में ऐसा कोई बुरा कर्म नहीं किया है जिसके परिणाम स्वरूप मुझे उनका इतना बुरा प्रतिफल भोगना पड़ रहा हो, मैं समझ नही पा रहा हूँ कि मुझे इतना कष्ट क्यों हो रहा है।

भगवान श्री कृष्ण ने भीष्म को उत्तर दिया "पितामाह, यह ठीक बात है कि आपने अपने गत सौ जन्मों में कोई ऐसा अनुचित कार्य नहीं किया है जिसके लिए आपको ऐसा परिणाम भुगतना पड़ रहा है परन्तु यदि आप एक जन्म और पीछे जायेंगे जिसे मैं देख पा रहा हूं और आप सिर्फ गत सौ जन्मों तक ही स्मृति रखने की सीमित क्षमता के कारण नहीं देख पा रहे हैं तो ज्ञात होगा कि जो भी कष्ट आपको हो रहा है वह आपके उस 101 वे पूर्व जन्म में किये गये कर्मों की परिणीति है।"

अचानक जो भी हादसे जैसे मृत्यु या घर के गिरने से घायल होना या सम्पत्ति का नुकसान, ये सब किसी अन्य द्वारा जानबूझकर किये गये ऐसे कार्यों की वजह से न होकर अपितु स्वयं द्वारा संचित परिणाम या फिर निर्मित प्रारब्ध की परिणीति होते है । जान बूझकर किसी अन्य द्वारा किये गये ऐसे कार्य उनके द्वारा नये कर्म होते हैं, जिन की परिणीति प्रारब्ध द्वारा बाद में होनी होती है। वर्तमान से उनका कुछ लेना देना नही होता । अतः हमें यह नही सोचना चाहिए कि

यदि हम आज बिना परिणाम भुगते हुये गलत काम करने के बावजूद बच रहे हैं तो बाद में भी हमेशा ऐसा ही होता रहेगा। अंततः हमें कर्मफल तो भुगतना ही होता है, आज नहीं तो कल। कहा भी गया है कि "भगवान के घर देर है पर अंधेर नही है ।"

3. क्रियामाण कर्म:

सामान्यतः शरीर द्वारा ऐसे कर्म होते हैं जिनका प्रतिफल तुरन्त प्राप्त होता है जैसे आग को छूने पर हाथ का जलना, लापरवाही से खाना खाने से पेट खराब हो जाना या बीमार पड़ जाना या फिर नशीले पदार्थों के सेवन करने से शरीर पर दुष्प्रभाव पड़ना एवं खाने पर मृत्यु हो जाना। मजदूरों के मजदूरी करने पर मजदूरी, परिणाम स्वरूप प्राप्त होती है ऐसे कर्म जिनका कोई आशय न हो एवं शरीरगत किये गये कर्म, क्रियामाण कर्म कहलाते हैं ।

संचित कर्मों का कर्मफल निश्चित होता है, जबकि प्रारब्ध कर्मों का कर्मफल निश्चित होता है परन्तु समय अनिश्चित होता है। क्रियामाण कर्मफल तुरन्त कभी-कभी प्रतिक्रिया स्वरूप होता है। दुख एवं कष्ट तुरन्त प्रभाव डालने के कारण अनुचित एवं अस्वागत योग्य एवं बुरे प्रतीत होते हैं, परन्तु दीर्घावधि के लिए ये शुध्दिकरण एवं जीवात्मा के सुधार के लिए होते हैं। ताकि अंततः जीवात्मा परम तत्व या परमात्मा के पवित्ररूप में शुध्द होकर विलीन हो सके, क्योंकि वही अंतिम पड़ाव है उसके बाद कुछ भी शेष नही । यहां तक कि उनकी (परमात्मा की इच्छा होने पर ही जीवात्मा परमात्मा से निकल कर इस नाशवान संसार मे पुनः आकर कीड़ा करती है और फिर वापस उसी परम तत्व में विलीन होने के लिए चली जाती है। यही परम सत्य है ।

अतः हमें नहीं भूलना चाहिए कि हमें पल-पल का हिसाब चुकाना है । शायद इस्लाम में इसी तथ्य को कयामत के रोज दो फरिश्तों का, दोनों कंधो पर प्रकट होकर, अच्छे एवं बुरे कर्मों की गवाही देना कहा गया है । हिन्दू धर्म में कर्मानुसार मृत्युपरांत स्वर्ग या नरक में वास करना बताया गया है इतना ही नहीं, अन्य धर्मों में भी इस से मिलती जुलती बातों का उल्लेख है। इन सबका मकसद मनुष्य को बुरे कर्मों से बचाकर, अच्छे कर्मों की ओर उन्मुख करना है

संसार के सभी धर्मों का मूल एक ही है पर हम मूल को छोड़कर व्यर्थ की बातों में उलझ जाते हैं एवं न केवल कष्ट पाते हैं अपितु चाहकर भी दीर्घकाल तक लख चौरासी के फन्दे से मुक्ति नही पाते । अतः हमें अपनी बुद्धि एवं विवेक का इस्तेमाल कर हर हालत में बुरे कर्मों से अवश्य बचना चाहिए । यही कल्याण का रास्ता है । और भी यह कि उस परम तत्व का स्मरण समय-समय पर करते रहना चाहिए जो हमें हर पल सन्मार्ग की ओर प्रेरित करता है एवं प्रतिफल हमारा कल्याण करता है ओउम्

नरेश कुमार
निदेशक,
वस्त्र आयुक्त का क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा

डिजीटलाइजेशन का युग

भारत देश में डिजिटल क्रांति लाने के लिए भारत सरकार द्वारा 1 जुलाई 2015 को "डिजिटल इंडिया" अभियान शुरू किया गया है । आज विश्व में वही देश विकास कर सकता है, जो डिजिटली सशक्त है । भारत देश भी इस ओर अग्रसर है, इससे वह अपना तो विकास करेगा ही साथ ही विश्व के अन्य विकसित देशों के समकक्ष खड़ा हो कर विश्व के विकास में भी सहयोग दे सकेगा ।

इस अभियान को सुचारू रूप से चलाने के लिए भारत सरकार द्वारा बहुत से कदम उठाये गए हैं । इसके अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों की विकास योजनाओं एवं अन्य कार्यों को डिजिटल किया गया है । इस प्रकार देश तकनीकी रूप से तो मजबूत होगा ही साथ ही हर क्षेत्र के विकास कार्यों में गति तेज होकर देश का सर्वांगीण विकास भी हो सकेगा ।

डिजिटल इंडिया अभियान के कारण देश में फ़ैल रहे भ्रष्टाचार पर भी काफी हद तक प्रतिबन्ध लगा है । जो कार्य कराने के लिए अधिकारियों के चक्कर काटने पड़ते थे और उन्हें खुश करके ही कार्य होना संभव था वही कार्य आज डिजिटली होने के कारण अब बहुत आराम से और बिना भ्रष्टाचार के संभव हो पा रहा है ।

लॉन्च	01 जुलाई 2015
किसने लॉन्च किया	प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी
सिद्धांत	पावर टू एम्पॉवर
लक्ष्य	भारत के दूरदराज के क्षेत्रों में डिजिटलाइजेशन
मंत्रालय	इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, वित्त मंत्रालय
प्रमुख व्यक्ति	रविशंकर प्रसाद, एसएस अहलूवालिया
डिजिटल इंडिया के तहत योजनाएं	भारतनेट, मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और स्टैंडअप इंडिया, इन्डस्ट्रियल कॉरिडोर्स , भारतमाला, सागरमाला
समर्थन	अमेरिका, जापान, दक्षिण कोरिया, ब्रिटेन, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, मलेशिया, सिंगापुर, उज्बेकिस्तान और वियतनाम।
वेबसाइट	digitalindia.gov.in

इस अभियान के शुभारंभ का मुख्य कारण सरकारी योजनाओं को डिजिटली उपलब्ध कराना था ताकि नागरिक बिना बिचौलिया के भी आवेदन कर सकें। जिससे विभिन्न क्षेत्रों में पारदर्शिता और जवाबदेही में बढ़ोतरी हो। इस अभियान के आदर्श वाक्य "पॉवर टू एम्पॉवर" के साथ इस अभियान ने न सिर्फ ई-गवर्नेंस के लाभों को बताया गया है बल्कि भारतवासियों को एक मजबूत डिजिटल टूल से लेस भी किया गया है। इस अभियान के माध्यम से बना मजबूत डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर सभी देशवासियों के बीच डिजिटल जागरूकता पैदा करेगा।

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की प्रमुख पहल

प्रत्यक्ष लाभ अन्तरण– इसके अन्तर्गत सरकार की ओर से मिलने वाले लाभों/सहायता को सीधे लाभार्थियों के बैंक खाते में अन्तरित किया जाता है। इसमें लगभग 440 कार्यक्रमों को शामिल किया गया है, जिससे आज करोड़ों की बचत होती है।

डिजिलॉकर– यह नागरिकों को उनके सार्वजनिक और निजी दस्ताबेज को पब्लिक क्लाउड में सुरक्षित रखने के लिए निजी जगह उपलब्ध कराकर कागजविहीन अभिशासन उपलब्ध कराता है।

उमंग- यह अनेक सरकारी सेवाओं को उपलब्ध कराने वाला सम्पूर्ण मोबाइल एप्प है। मेरी सरकार (MY GOV) यह साझा डिजिटल प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराता है, जिसमें नागरिक सरकारी कार्यक्रमों और योजनाओं के बारे में अपने विचार साझा करते हैं। यह विदेशों में भी लोगों को विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने को प्रोत्साहित करता है

डिजिटल भुगतान- इस कार्यक्रम के अन्तर्गत डिजिटल भुगतान केन्द्र; जैसे-भीम एप्प, भीम आधार, भारत क्यूआर कोड आदि शुरू किए गए हैं, जिससे समय की भी बचत होती है।

जीवन प्रमाण– इसमें पेन्शन भोगियों को अपना जीवन प्रमाण-पत्र किसी भी समय और किसी भी स्थान पर डिजिटल तरीके से भेजने या प्रस्तुत करने में मदद मिलती है।

जीईएम– यह आम प्रयोग की वस्तुओं और सेवाओं की सरकारी खरीद का ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म है। राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल इस एकल ऑनलाइन पोर्टल के द्वारा अनेक छात्रवृत्ति योजनाओं की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।

ई-कोर्ट्स मिशन मोड परियोजना- इसके अन्तर्गत उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालय, जिला न्यायालय में केस स्टेटस, कोर्ट ऑर्डर आदि कई सेवाएँ शामिल हैं। इसके अन्तर्गत नेशनल ज्यूडिशियल डेटा ग्रिड भी प्रारम्भ किया गया है, जिसमें कई अ दालतों से एकत्र किए गए आंकड़ों का विश्लेषण किया जाता है और डैशबोर्ड के माध्यम से अखिल भारतीय आँकड़ों को प्रदर्शित किया जाता है।

ई-मेल सेवाएँ- डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम के अन्तर्गत सरकार सभी आधिकारिक संवाद के लिए सुरक्षित ई-मेल सेवा उपलब्ध कराती है।

ई-हॉस्पिटल- यह ऑनलाइन पंजीकरण फ्रेमवर्क मरीजों को सरकारी अस्पतालों के साथ ऑनलाइन ओपीडी जाँच कराने की सुविधा प्रदान करने की एक पहल है।

ई-साइन– ई-केवाईसी सेवा के माध्यम से आधार धारक के प्रमाणीकरण का उपयोग करके ऑनलाइन हस्ताक्षर सेवा की सुविधा प्रदान करता है।

इलेक्ट्रॉनिक डिजिटल शिक्षा- इसके अन्तर्गत स्वयं (SWAYAM), स्वयंप्रभा तथा राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी प्रमुख हैं, जो शिक्षा के प्रमुख पाठ्यक्रम उपलब्ध कराते हैं।

इसी प्रकार डिजिटल इण्डिया के अन्तर्गत ई-पुलिस, वर्चुअल लैब, ई-यन्त्र, ई-गवर्नेंस जैसे प्रमुख कार्यक्रम संचालित हैं।

कोविड-19 के दौरान भी सरकार द्वारा कई डिजिटल प्रोग्राम अपनाए गए हैं, जैसे:-

आरोग्य सेतु ऐप यह एक कोरोना वायरस ट्रैकिंग ऐप है, जो जीपीएस एवं ब्लूटूथ के माध्यम से ट्रैक करता है।

चैटबोट प्रधानमंत्री ने लोगों के कोरोना सम्बन्धी प्रश्नों के समाधान हेतु व्हाट्सएप चैटबोट से जुड़ने की घोषणा की थी।

GOK Direct यह ऐप केरल सरकार द्वारा लोगों को कोरोना बायरस महामारी से जागरूक करने हेतु लॉन्च किया गया

आपूर्ति सुविधा ऐप नोएडा प्राधिकरण ने लोगों तक आवश्यक वस्तुओं को पहुँचाने के लिए आपूर्ति सुविधा ऐप लॉन्च किया था।

लोकेटर व COVA गोवा सरकार ने कोविड-19 लोकेटर ऐप तथा पंजाब सरकार ने COVA ऐप लॉन्च किया था।

कोरोना वायरस से बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में लोगों को जागरूक करने हेतु कोरोना महामारी के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में नवीन क्रांति आयी। बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। वीडियो क्लासेज, प्री रिकॉर्डेड वीडियो क्लासेज, स्लाइड्स, ऑनलाइन टेस्ट, पीडीएफ आधारित ऑनलाइन शिक्षा का बृहत स्तर पर प्रयोग किया जाने लगा।

कोरोना के दौरान इस रोग के प्रसार को रोकने तथा इससे बचने हेतु तरह-तरह के उपाय डिजिटल माध्यमों की मदद से लोगों तक पहुँचाए गए। देश भर से डाटा एकत्रीकरण में डिजिटलाइजेशन का बखूबी उपयोग किया गया। कोरोना के दौर में लेन-देन एवं क्रय-विक्रय में नकदी के प्रयोग पर रोक लगी तथा लोगों द्वारा ऑनलाइन पेमेंट को व्यापक पैमाने पर अपनाया गया।

डिजिटल भारत के तीन मुख्य घटक

डिजिटल भारत का सबसे पहला घटक डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर है। डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर यानी भारत के हर क्षेत्र में डिजिटल सेवाएं पहुँचाने के लिए एक मजबूत और बुनियादी ढांचा तैयार करना। इसमें विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों पर अधिक बल दिया गया है, क्योंकि आज भी भारत के कई ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली और नेटवर्क नहीं पहुंचा है।

इस अभियान का दूसरा मुख्य घटक डिजिटल सेवा का वितरण करना है। यानी भारत सरकार द्वारा की जाने वाली किसी भी सहाय या सेवा का डिजिटल रूप से सही वितरण करना। इससे देश में भ्रष्टाचार को भी काफी हद तक रोका जा सकता है। क्योकि अगर हमारे पैसो की सारी लेन-देन डिजिटल हो जाएगी तो इन सभी लेन-देन पर हमेशा सरकार की नज़र होगी।

डिजिटल भारत का तीसरा घटक डिजिटल साक्षरता है। डिजिटल साक्षरता यानी डेस्कटॉप, पीसी, लैपटॉप, स्मार्टफोन और टैबलेट जैसे इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों का ज्ञान होना। यदि लोगों को इन सभी उपकरणों का ज्ञान नहीं होगा तो वे इनका ठीक से उपयोग नहीं कर पाएंगे। इस डिजिटल भारत अभियान के तहत भारत के 6 करोड़ ग्रामीण परिवारों को शामिल करने का लक्ष्य रखा गया था। इसके अलावा भारत की राष्ट्रीय ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क परियोजना का संचालन करने वाली कंपनी भारत ब्रॉडबैंड नेटवर्क लिमिटेड इस अभियान की संरक्षक है।

डिजिटल इंडिया का उद्देश्य

डिजिटल इंडिया के तीन कोर घटक हैं - डिजिटल आधारभूत ढाँचे का निर्माण करना, इलेक्ट्रॉनिक रूप से सेवाओं को जनता तक पहुंचाना, डिजिटल साक्षरता

डिजिटल इंडिया का सबसे पहला उदेश्य भारत के प्रत्येक गांव तक ब्रॉडबैंड को पहुंचाना था। इसके अलावा देश की 2.5 लाख ग्राम पंचायतों तक ब्रॉडबैंड को पहुंचाना और हाई स्पीड इंटरनेट से भारत के सभी नागरिको को जोड़ना था।

इलेक्ट्रानिक उत्पादन को बढ़ावा देकर **IT** क्षेत्र में रोजगार लाना भी इस अभियान का मुख्य उदेश्य था। क्योकि जब भी हमारी सरकार कोई नयी योजना लाएगी तो उसका सारा काम ऑनलाइन होगा। इससे ग्रामीण इलाकों में नए-नए **IT** रोजगार पैदा होंगे। जैसे कि, राजस्थान की **ई-मित्र योजना** से वहा के कई लोगों को रोजगार मिला था।

लोगो के अंदर जागरूकता लाना भी इस अभियान का मुख्य उदेश्य है। लोग इंटरनेट से विश्व में चल रही सारी गतिविधियों पर नजर रख पाएंगे। वो हर जानकारी को घर बैठे पढ़ पाएंगे, जिसके कारण उन्हे कोई भी व्यकती बेवकूफ नहीं बना पाएंगा। इससे सरकारी योजनाओं के सभी लाभों की जानकारी देश के प्रत्येक नागरिक को पता चल जाएगी। इसकी वजह से योजना के सही हकदार को उसका लाभ मिल पाएगा।

इस अभियान से भारत के हर नागरिक को डिजिटल सशक्तिकरण बनाकर डिजिटल ढांचा प्रदान करना है। इसके अलावा इलेक्ट्रानिक चीज़ों के उत्पादन में बढ़ावा देना भी इस अभियान का उदेश्य है।

इस योजना को 2019 तक कार्यान्वित करने का लक्ष्य है। एक टू-वे प्लेटफॉर्म का निर्माण किया जाएगा, जहाँ दोनों को लाभ होगा। यह एक अंतर-मंत्रालयी पहल होगी, जहाँ सभी मंत्रालय तथा विभाग अपनी सेवाएं जनता तक पहुंचाएंगे, जैसे कि स्वास्थ्य, शिक्षा और न्यायिक सेवा आदि। चयनित रूप से पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल को अपनाया जाएगा। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय सूचना केंद्र के पुनर्निर्माण की भी योजना है। यह योजना मोदी प्रशासन की टॉप प्राथमिकता वाली परियोजनाओं में से एक है। यह एक सराहनीय और सभी साझेदारों की पूर्ण समर्थन वाली परियोजना है। जबकि इसमें लीगल फ्रेमवर्क, गोपनीयता का अभाव, डाटा सुरक्षा नियमों की कमी, नागरिक स्वायत्तता हनन, तथा भारतीय ई-सर्विलांस के लिए संसदीय निगरानी की कमी तथा भारतीय साइबर असुरक्षा जैसी कई महत्वपूर्ण कमियाँ भी हैं। डिजिटल इंडिया को कार्यान्वित करने से पहले इन सभी कमियों को दूर करना होगा।

डिजिटल इंडिया के 9 स्तंभ-

- ब्रॉडबैंड हाइवेज सुविधा
- हर घर में मोबाईल फोन सुविधा
- **सार्वजनिक इंटरनेट एक्सेस कार्यक्रम – राष्ट्रीय ग्रामीण इंटरनेट मिशन**
  ई-गवर्नेंस : प्रौद्योगिकी के माध्यम से सुधार
  ई-क्रांति : इलेक्ट्रॉनिक डिलीवरी ऑफ़ सर्विसेज
  सभी के लिए सूचना इलेक्ट्रॉनिक मैन्युफैक्चरिंग ज्यादा से ज्यादा आईटी नौकरियां

प्रारंभिक फसल कार्यक्रम-

डिजिटल इंडिया के माध्यम से दी जाने वाली सुविधाएं

1. आधार कार्ड पैन कार्ड आदि का आवेदन ऑनलाइन जैसी सुविधाएं
2. ब्रॉडबैंड हाईवे
3. मोबाइल कनेक्टिविटी के लिए यूनिवर्सल एक्सेसरीज
4. सार्वजनिक इंटरनेट सेवा पर सबकी पहुंच
5. ई गवर्नेंस
6. ई क्रांति
7. पंचायतों को हाई स्पीड डिजिटल हाईवे से जोड़कर सुविधा देना
8. नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल की सुविधा
9. शहरों में वाई-फाई की सुविधा
10. कई सरकारी सुविधा पर जनता की पहुंच होगी
11. जनता को ई बस्ता और ई लॉकर की सुविधा मिलेगी
12. किसान मंडियों की जानकारी ऑनलाइन

डिजिटल इंडिया के लाभ

वर्तमान के इस आधुनिक युग को हम डिजिटल युग भी कह सकते है। क्योकि आज हमारे आस-पास हर काम कोई न कोई इलेक्ट्रॉनिक्स से ही हो रहा है।

- **भ्रष्टाचार मे कमी**

हमारे देश के ग्रामीण इलाकों के लोग भ्रष्टाचार के ज्यादा शिकार होते है। क्योंकि जानकारी कम होने की वजह से बड़े अधिकारी उनसे पैसे लेते हैं, जबकि यह सरकार की ओर से फ्री होता है। कई बार तो उन्हें सरकारी सुविधाओं और योजनाओं की जानकारी भी नहीं मिलती है। जिस वजह से बड़े अधिकारी इन सुविधाओं का इस्तेमाल अपने फायदे के लिए करते है।

लेकिन डिजिटल इंडिया के इस अभियान से देश का भ्रष्टाचार कम होगा। क्योंकि इस अभियान से भारत के हर घर में फोन और इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। जिससे इन लोगों तक भारत सरकार की सभी योजनाओं की खबर पहुंचेगी। इस तरह डिजिटल इंडिया से भ्रष्टाचार में काफी हद तक कमी आएगी।

- **ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए तकनीकी शिक्षा**

इस अभियान के तहत भारत के हर ग्रामीण क्षेत्र में इंटरनेट की पहुंच होगी। जिसकी वजह से ऐसे इलाकों के विद्यार्थियों को भी कंप्यूटर और इंटरनेट की शिक्षा मिलेगी। उसके बाद छात्र खुद इंटरनेट से नई-नई शिक्षा सामग्री देखेंगे। अगर इससे किसी एक विध्यार्थी की ज़िंदगी बदल जाए तो यह अभियान सफल हो जाएगा। इसका एक बड़ा फायदा यह भी होगा कि, ग्रामीण छात्रों को बड़े शहरों में जाकर पढ़ाई नहीं करनी पड़ेगी। वे गांव में रहकर इंटरनेट के माध्यम से उच्च शिक्षा प्राप्त कर पाएंगे।

- **कालाबाजारी और टैक्स चोरी कम होगी**

डिजिटल इंडिया के तहत सभी काम ऑनलाइन हो जाएंगे। उसके साथ-साथ पैसो की लेन-देन और भुगतान भी ऑनलाइन किया जाएगा। जिससे हमारी सरकार इन सभी कार्यो और पैसो की लेन-देन पर नज़र रख सकती है। सरकार यह भी जान सकेगी कि किसने टैक्स का भुगतान किया है और किसने नहीं। इससे देश का कोई भी व्यक्ति टैक्स चोरी, कालाबाजारी और भ्रष्टाचार नहीं कर सकेगा। जब भ्रष्टाचार कम होगा तो देश कि अर्थव्यवस्था भी मजबूत बनेगी।

- **सरकारी कार्यालयो में लगी लाइनों से छुटकारा**

डिजिटल भारत अभियान की वजह से हमे लंबी-लंबी सरकारी कार्यालयो की लाइनों से छुटकारा पा सकेंगे। क्योंकि हम सभी जानते हैं कि सरकारी विभागों में काम बहुत धीमी गति से होता है। जिसके कारण सामान्य लोगो को अपना काम करवाने के लिए लंबी-लंबी लाइनो में लगना पड़ता है। इसकी वजह से उनका काफी समय खराब होता है और रोजगार भी बाधित होता है। लेकिन अब ऑनलाइन प्रक्रिया के कारण पैन कार्ड, राशन कार्ड, बैंकिंग सुविधाओं और सरकारी कार्यालयों के लिए लंबी-लंबी कतारों में खड़े होने की जरूरत नहीं होगी।

- **देश तेजी से विकास करेगा**

इस अभियान की वजह से देश का विकास तेजी से होगा। क्योकि इसकी वजह से हमारे देश के बिछड़े हुए गांवों का विकास होगा। भारत के हर गांव में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग भी इंटरनेट का उपयोग कर देश के विकास में अपना योगदान दे सके।

- **डिजिटल इंडिया अभियान के अन्य लाभ**

वर्तमान में हम किसी भी सरकारी परीक्षा का फॉर्म और उसकी फीस अपने घर बैठ कर भर सकते है। इसके अलावा आप अपने सरकारी कार्यो को भी घर बैठ कर आसानी से कर सकते है। आज के समय में डिजिटल इंडिया की वजह से नए-नए रोजगार के अवसर प्रदान हो रहे है। देश की IT संस्थानों को बेहतर बनाने के लिए और उन्हें डिजिटल रूप से विकसित करने के लिए यह अभियान बहुत महत्वपूर्ण है।

डिजिटल इंडिया की हानि

- डिजिटलीकरण ने हम मनुष्यों को मशीनों पर निर्भर कर दिया है।
- हम किसी अपने से बात करने के लिए भी किसी मशीन का ही प्रयोग करते है।
- डिजिटलीकरण ने हमें एक दूसरे से सामाजिक रूप से दूर किया है।
- इंटरनेट के इस्तेमाल ने साइबर क्राइम को बहुत बढ़ावा दिया है।
- भारत में इसके प्रति कोई विशेष सावधानी नहीं बरती जाती है, जिस कारण साइबर क्राइम का खतरा बढ़ जाता है।
- डिजिटल इंडिया की सफलता के लिए इंटरनेट का प्रयोग करना ज़रूरी होता है।
- उच्च कीमत और धीमी गति की वजह से, ये सभी के लिए प्रयोग करना मुश्किल हो जाता है, विशेषकर गरीब लोगों के लिए

डिजिटल इंडिया अभियान से इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का निर्माण :-

डिजिटल अभियान के तहत कई प्रकार के उपकरणों का निर्माण किया गया है, जैसे मोबाइल सेटअप बॉक्स, फेस लेस डिजाइन, माइक्रो एटीएम, स्मार्ट कार्ड, वी सेट आदि जैसे उपकरणों का हमारे देश में निर्माण किया गया है।

हमारे भारत देश के लिए डिजिटल इंडिया जैसी योजनाओं की बहुत जरूरत है क्योंकि पिछड़े हुए क्षेत्रों को अगर उभारना है तो वहां पर शिक्षा और इंटरनेट का पहुंचना बहुत जरूरी है तभी जाकर वहां के लोग भारत के विकास में भागीदार बन सकेंगे डिजिटल इंडिया के माध्यम से सरकार का उद्देश्य है कि किसी भी सरकारी सुविधा से भारतीय लोगों को वंचित ना होना पड़े और सरलता से वह सुविधा प्राप्त कर सके और भारतीय लोग पड़ोसी देशों के लोगों से आगे बढ़ सके डिजिटल इंडिया के द्वारा पीएम नरेंद्र मोदी जी की यह मुहिम है की सभी को इंटरनेट सुविधा प्रदान की जाए।

काजल
डाटा एंट्री ऑपरेटर
भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा

विद्या धनम्

मेरे प्यारे विद्यार्थियो, तुम देश, समाज और परिवार के भावी नागरिक हो, भावी संरक्षक हो, देश और समाज के भावी प्रहरी हो। यदि जीवन अनमोल बनाना है तो विद्या को सतत परिश्रम के साथ ग्रहण करो! विद्या ग्रहण करके अपना भविष्य, अपने परिवार का भविष्य, अपने समाज का भविष्य और अपने देश का भविष्य उज्ज्वल बना सकते हो। विद्या के विहीन मनुष्य पशु के समान होता है। अतः देश के युवाओं, विद्यार्थियों से अनुरोध है कि अपना भविष्य अनमोल बनाना है तो परिश्रम के साथ विद्या अध्ययन कीजिये। बुढ़ापे में विद्या प्राप्त नहीं की जा सकती है। विद्या प्राप्त करने की उम्र केवल 25 साल की आयु तक है। यदि आपने 25 साल की उम्र तक विद्या प्राप्त कर ली तो जीवन आराम से गुजारोगे और नहीं प्राप्त की तो जीवन कष्टकारी होगा। अतः सभी विद्यार्थी अपने कठिन परिश्रम के साथ विद्या ग्रहण करें। यदि आपने आलस्य को अपना घर बना लिया तो भविष्य अंधकार में होगा। ऐसा सर्वत्र शास्त्र विदित है।

विद्या का महत्व: विद्या क्या है ? कैसी है ? ये सब सवाल निरर्थक हैं, क्योंकि विद्या से ही मनुष्य अच्छे-बुरे में अन्तर कर पाता है। किसी भी जन उपयोगी वस्तु का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करना ही तो विद्या है। विद्वजनों के द्वारा कहा जाता है कि - "उत्कृष्ट ज्ञान सर्वोपरि है। विद्याहीन मनुष्य जड़, मूर्ख व दानव होता है तथा विद्या से मनुष्य चेतन तथा देवता बन जाता है। जो व्यक्ति जिस कला को जानता है, वह उसका प्रकांड पण्डित बन जाता है। वास्तव में विद्या मनुष्य की असली पूंजी है तथा वास्तविक श्रृंगार है। विद्या से ही मनुष्य असली सम्पत्ति का मालिक बनता है। विद्यावान व्यक्ति विनयी हो जाता है, विनय से योग्यता आ जाती है तथा योग्यता से धन प्राप्त कर लेता है। विद्या ऐसा धन है कि इसे कोई चुरा नहीं सकता है, भाई बाँट नहीं सकता है, राजा छीन नहीं सकता है तथा विद्या धन का जितना उपयोग करोगे उतना ही बढ़ता जाएगा, अतः विद्या से बड़ा कोई धन नहीं है। प्यारे बच्चो क्या तुम विद्या धन को अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए प्राप्त करना चाहोगे ? सब कुछ आपके ऊपर निर्भर है। संसार के हर व्यक्ति को सम्मान, यश, ख्याति, धन, मान सब कुछ विद्या से ही प्राप्त होता है । कृषि कार्य में पारंगत व्यक्ति देश का अन्नदाता किसान कहलाता है। संसार में जितने भी महान तथा यशस्वी व्यक्ति हुए हैं, वे विद्या से ही महान बने हैं। विद्यावान व्यक्ति अपनी अद्भुत विशेषताओं के कारण सदा ही प्रशंसनीय जीवन व्यतीत करता है कभी भी ऐसा इंसान न तो भूखा रहता है न ही किसी को भूखा रखता है क्योंकि उसके पास विद्यारूपी धन होता है। इसलिए वास्तव में विद्या हमारे लिए कल्पवृक्ष के समान है। विद्या ही हमारी बाधाओं से भरे जीवन रूपी नैया को पार उतार सकती है ।

विद्यार्थी जीवन का महत्व: विद्यार्थी जीवन काल किसी भी मनुष्य के जीवन का सबसे अधिक महत्वपूर्ण समय होता है। इसी विद्यार्थी जीवन काल पर मनुष्य का सम्पूर्ण भविष्य निर्भर करता है। इस काल का सदुपयोग करने वाले विद्यार्थी अपने भविष्य काल को बहुत ही आरामदायक और सुखमय बना सकते हैं और इस काल को व्यर्थ में ही नष्ट कर देने वाले विद्यार्थी अपने आने वाले भविष्य को अंधकारमय बना लेते हैं। विद्यार्थी जीवन काल एक ऐसा समय है जिसमें किसी भी मनुष्य के चरित्र की नींव पड़ती है । अतः सभी विद्यार्थियों को अपने इस जीवन काल में अपना हर एक कदम बहुत ही सोच समझकर उठाने की जरूरत होती है। विद्यार्थियों को अपने विद्यार्थी जीवन काल में अपनी शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल-कूद और व्यायाम पर पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए तथा उन्हें विद्यार्थी जीवन में बहुत ही परिश्रमी और लगनशील होना चाहिए। हर व्यक्ति को अपने जीवन में सफल होने के लिए.. शिक्षित होना बहुत ही आवश्यक है। विद्यार्थी जीवन काल हमारे जीवन का वह काल है जहां हम अपने जीवन के बाकी बचे हुए समय के लिए अपने कौशल को सीखते और विकसित करते हैं इसलिए हर विद्यार्थी को इस काल में स्वाध्याय को सफलता का मूलमंत्र बनाना चाहिए। उन्हें हर प्रकार की बुरी संगत से बचे रहकर व नम्र बने रहकर विद्या अर्जित करने का प्रयास करना चाहिए। ज्ञान के द्वारा ही तो जीवन का मार्ग प्रशस्त होता है। अतः प्रत्येक विद्यार्थी को विद्या द्वारा मस्तिष्क का विकास करना चाहिए। विद्यार्थियों को इस बात को गहनतापूर्वक समझना चाहिए कि आगामी जीवन के लिए धन, विचारशक्ति, ज्ञान और स्वास्थ्य की आवश्यकता होती है। मानव जीवन की चार अवस्थायें होती हैं जैसे बाल्यावस्था, युवावस्था, मध्यावस्था एवं वृद्धावस्था आदि और इन चार अवस्थाओं में यह आवश्यक है कि:-

पहले विद्या पाइये, धन अर्जन दूजे काल, धर्म सुमार्ग पाइके, अंत समय साकार

पहले में विद्या नहीं, धन नहीं दूजे काल, नहीं सुमार्ग धर्म फिर अन्त समय बेकार।

विद्यार्थियों को अपने स्वास्थ्य, चरित्र और विद्या के लिए अपनी दैनिक दिनचर्या कुछ ऐसी बनानी चाहिए कि उनके सभी कार्य पूरे हो जाएं और समय भी व्यर्थ न हो। प्रत्येक विद्यार्थी को प्रातः काल सुबह उठना चाहिए, तथा नित्य कर्म आदि से निवृत्त होकर स्वाध्याय करना चाहिए तथा कुछ समय स्वाध्याय करने के पश्चात् व्यायाम और स्नान आदि करना चाहिए। प्रतिदिन व्यायाम करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है। इसके बाद भगवान का ध्यान करके विद्यालय में ध्यानपूर्वक पढ़ाई करनी चाहिए। स्कूल में पढ़ाई, खेलकूद आदि सभी प्रतियोगिताओं में प्रत्येक छात्र को भाग लेना चाहिए। छात्रों को समय पर जागना व समय पर ही सोना चाहिए। विद्यार्थी जीवन काल में विद्यार्थियों का आहार पौष्टिक होना चाहिए, तथा विद्यार्थियों को बुरी संगत में पड़ने से बचना चाहिए। जो विद्यार्थी कुसंगति से बचा रहता है वही सुमार्ग पर चलकर अपने जीवन काल में लक्ष्य को प्राप्त कर पाता है।

विद्यार्थियों को संयमी, परिश्रमी, आज्ञाकारी, व समय का पाबंद और लगनशील होना अति आवश्यक है। विद्या अर्जन करने की चाह रखने वाले विद्यार्थी जब विनम्रता को धारण करते हैं तब अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए उनकी राहें आसान हो जाती हैं। विद्यार्थी

जीवन काल मानवीय गुणों को अंगीभूत करने का काल है विद्यार्थी जब प्रत्येक परिस्थिति, सुख-दुःख, हानि-लाभ, सफल-असफल, सर्दी-गर्मी की परवाह किए बिना प्रतिदिन अध्ययनशील रहता है तब ही उसका जीवन सफल हो पाता है। हालांकि विद्यार्थियों को विद्या प्राप्ति के रास्ते में कुछ कष्ट तो उठाने ही पड़ते हैं। जैसे आग में तपे बिना सोना शुद्ध नहीं होता ठीक वैसे ही विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य की प्राप्ति करने के लिए परिस्थितियों का सामना करते हुए कष्ट की परवाह किए बिना अध्ययनरत रहना चाहिए। इसलिए जो विद्यार्थी अपने जीवन में सुख की चाह न रखते हुए केवल विद्या की चाह रखता है, व धैर्य, साहस, स्वाभिमान ईमानदारी, लगनशीलता जैसे गुणों को अपनाकर निरन्तर विद्या अर्जन के पथ पर आगे बढ़ता रहता है. वह अपने जीवन में निर्धारित लक्ष्य को अवश्य प्राप्त करता है ।

विद्या कल्पवृक्ष के समान है: शास्त्र कहते हैं कि हम उन ज्ञानी पुरुषों का संग करें जो मानव समाज की जानकारी रखते हैं, जो जीवन-निर्माण के सिद्धांतों को समझते हैं। विद्वान आत्मविद्या और ब्रह्मविद्या को भली-भांति जानने वाले होते हैं। ऐसे लोगों की संगति करने से मनुष्य अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकता है। शिक्षा द्वारा उपार्जित ज्ञान ही विद्या है। विद्या और ज्ञान एक अर्थ के दो पर्याय हैं। स्वामी दयानन्द का मानना था कि जिससे पदार्थों के यथार्थ स्वरूप का बोध हो वह विद्या है और जिससे वास्तविक स्वरूप न जान पड़े वह अविद्या कहलाती है। विद्या का धन सब धनों से प्रधान और श्रेष्ठ है महाभारत में यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा था 'यात्रा में सहायक कौन ? युधिष्ठिर ने उत्तर दिया, 'विद्या' परदेस में विद्या एक मित्र के समान सहायक होती है। इससे और आगे, विदेश में विद्या माता के समान रक्षक और हितकारिणी होती है, पिता के समान हित कार्यों में सहायक होती है और दुःख को दूर करके गृहलक्ष्मी के समान आनन्द प्रदान करती है। विद्या होने से मनुष्य की कीर्ति बढ़ती है और भाग्य के नष्ट हो जाने पर भी विद्या आश्रय देती है। विद्या कामधेनु के समान है। विद्या मनुष्य की शोभा होने के साथ उसका छिपा धन भी है, न कोई इसे चुरा सकता है और न इसका कोई भार है। विद्या है तो भोग, यश और सुख सब मिलने की आशा रहती है। कल्पवृक्ष के समान विद्या क्या नहीं देती ? जो बुद्धि व विद्या से विहीन है, धर्माचरण नहीं करता, यश के प्रति उदासीन है और विद्यादान में जिसकी रुचि नहीं, उसकी समाज में कोई उपयोगिता नहीं होती। ऐसे व्यक्ति को धरती का बोझ माना जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। विद्या से क्या प्राप्त होता है, इसे क्यों ग्रहण करना चाहिए ? विद्या का प्रथम लक्षण है विनम्रता । विनम्रता से योग्यता प्राप्त होती है, योग्यता से धन की प्राप्ति होती है, धन से धर्म होता है और धर्म से सुख मिलता है। जिस विद्या से अभिमान की उत्पत्ति होती है वह उचित नहीं है। विद्या से बुद्धि के निर्मल होने पर ही मिथ्या ज्ञान अर्थात अविद्या के फन्दों से बचा जा सकता है। शिक्षा हमें जागे ले जाती है, विषयासक्ति से बचाने में सहायक होती है, कर्म कुशल बनाती है और उन्नत होने में सहायक होती है। विद्या वही उत्तम है जो आवागमन के चक्र से छुड़ाकर मुक्ति की प्राप्ति कराए। शास्त्रकारों ने विद्या की परिभाषा दी थी 'सा विद्या या विमुक्तये, विद्या वही है जो दुःखों से छुड़ा दे। जो और दुःखों को लाद दे, वह विद्या नहीं अविद्या है। विद्याहीन मनुष्य का बड़े कुल में पैदा होने से क्या लाभ है ? मलीन कुल में उत्पन्न होने वाला विद्वान भी उचित सम्मान पाता है। विद्या का महत्व सर्वोपरि है। अकेली विद्या ही परम संतोष दे सकती है। ज्ञान शक्ति है। ज्ञान से मनुष्य उन्न होता है। ज्ञान से मनुष्य मोक्ष को प्राप्त करता है। ज्ञान वह पंख है जिसके द्वारा हम आकाश की ओर उड़ते हैं। मनु द्वारा वर्णित धर्म के दस लक्षणों में विद्या और बुद्धि दोनों का एक साथ वर्णन है। जो बात हम अपनी बुद्धि से नहीं जान पाते, उसका ज्ञान देने के लिए विद्या होती है। विद्या हमारी बुद्धि को सुसंस्कृत करती है । विद्या ईश्वर का ज्ञान है जो कल्पवृक्ष के समान है।

विष्णुपुराण में १८ विद्याएं गिनाई गई है।

अङ्गानि चतुरो वेदाः मीमांसा न्यायविस्तरः, पुराणं धर्मशास्त्रञ्च विद्याः हि एताः चतुर्दशाः । आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वचैव तेषयः, अर्थशास्त्रं चतुर्थन्तु विद्या हि अष्टादशैव ताः

भावार्थ : छः वेदांग, चार वेद, मीमांसा, न्याय, पुराण और धर्मशास्त्र- ये ही चौदह विद्याएँ हैं इन्ही में आयुर्वेद, धनुर्वेद और गान्धर्व इन तीनों को तथा चौथे अर्थशास्त्र को मिला लेने से कुल अठारह विद्या हो जाती हैं। विद्या केवल परोपकार के लिए होती है। आतंकवाद, दुराचार, मन-मलीनता, परपीड़ा, अन्याय, देशद्रोह, चोरी, काम, क्रोध, मद, लोभान धोखा, संस्कार विहीनता आदि पाप की श्रेणी में आते हैं, जिनकी कुदक्षता को कभी विद्या नहीं कहा जाता है।

इसी प्रकार 'लोकनीति' नामक पालि ग्रन्थ में १८ विद्याऐं गिनाई गयीं है, जो कुछ भिन्न हैं :

श्रुति सम्मुति संख्या च, योगा नीति विसेसिका, गंधब्बा गणिका चेव, धनुबेदा च पुराणाः ।

तिकिच्छा इतिहासा च, जोति माया च छन्दति हेतु मन्ता च सद्दा च, सिप्पाट्ठारसका इमे । भावार्थ: श्रुति, स्मृति, सांख्य, योग, नीति, वैशेषिक, गंधर्व (संगीत), गणित, धनुर्वेद, पुराण, चिकित्सा, इतिहास, ज्योतिष, माया (जादू), छन्द, हेतुविद्या, मन्त्र (राजनय), और शब्द (व्याकरण) - ये अठारह शिल्प (विद्याएँ) हैं।

सत्कर्मश्च विवेकञ्च निर्मलम् नयनम् द्वयः यस्य नास्ति सो अंधः कुतो न गमनम् कुमार्ग गह। भावार्थ : सत्कर्म और सदविवेक इंसान के दो निर्मल चछु हैं, यदि इनका सदुपयोग कर लिया तो जीवन सफल हो जायेगा, अन्यथा कुमार्ग पर चलने के बाद पतन निश्चित है। अतः अपने और जन कल्याण के लिए सत्कर्म करो

विद्या के लिए हमारे वेद, पुराण, उपनिषद क्या कहते हैं इन श्लोकों को विद्यार्थी पढ़करके अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए जीवन में धारण करें।

नैतिक विद्या :

न चोरहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारी,

व्यये कृते वर्धते एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनम् प्रधानम् 1. भावार्थ : विद्यारूपी धन को कोई चुरा नहीं सकता, राजा छीन नहीं सकता, भाईयों में उसका बंटवारा नहीं हो सकता है, विद्या के ऊपर कोई कर नहीं लगता है, और खर्च करने से बढ़ता है, सचमुच विद्यारूपी धन सर्वश्रेष्ठ है।

सुखार्थिनः कुतोविद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम्,

सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् 2. भावार्थ: जिस विद्यार्थी को सुख की अभिलाषा है (कष्ट उठाना न हो) उसे विद्या कहाँ से ? और विद्या चाहने वाले विद्यार्थी को सुख कहाँ से ? सुख चाहने वाले विद्यार्थी को विद्या प्राप्त नहीं हो सकती है, विद्या प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को सुख को त्याग देना चाहिए।

नास्ति विद्यासमो बन्धुर्नास्ति विद्यासमः सुहृत्, नास्ति विद्यासमं वित्तं नास्ति विद्यासमं सुखम् । 3. भावार्थ : विद्या जैसा बंधु नहीं, विद्या जैसा मित्र नहीं, और विद्या जैसा अन्य कोई धन नहीं है और विद्या जैसा सुख नहीं है। ज्ञातिभिर्वण्टयते नैव चोरेणापि न नीयते दाने नैव वयं याति विद्यारखं महाधनम्। 4.भावार्थ: यह विद्यारूपी रतन महान धन है, जिसका वितरण परिचितों के द्वारा नहीं सकता, जिसे चोर चुरा के नहीं ले जा सकते, और जिसका दान करने से क्षय नहीं होता सर्वद्रव्येषु विचैव द्रव्यमाहुरनुत्तमम्, अहार्यत्वादनत्वादक्षयत्वाच्च सर्वदा । 5.

भावार्थ : सब द्रव्यों में विद्यारूपी द्रव्य सर्वोत्तम है, क्योंकि वह किसी से हरण नहीं किया जा सकता, उसका मूल्य नहीं आँका जा सकता है, और विद्यारूपी द्रव्य का कभी नाश नहीं होता है। विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छतगुप्तं धनम्, विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः । 6. भावार्थ: विद्या इन्सान का विशिष्ट रूप है. गुप्त धन है। वह सुख देनेवाली, यशदात्री, और सुखकारक है और विद्या गुरुओं का भी गुरु है।

विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतम्, विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः। 7. भावार्थ: विद्या विदेश में वह इन्सान की बंधु है। विद्या परम देवता है, राजा विद्या की ही पूजा करते हैं, धन की नहीं। इसलिए विद्याविहीन व्यक्ति पशु के समान है। अलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतो धनम्, अधनस्य कुतो मित्रम् अमित्रस्य कुतो सुखम्। 8. भावार्थ: आलसी इन्सान को विद्या कहाँ ? बिना विद्या धन कहाँ ? धनविहीन को मित्र कहाँ ? और मित्रविहीन को सुख कहाँ ? अतः जीवन में विद्या को प्राप्त कीजिये

रूप यौवन संपना विशाल कुल सम्भवाः, विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः 9.

भावार्थ: रूप संपन, यौवनसंपन्न, और चाहे विशाल कुल में पैदा क्यों न हुए हों, पर जो विद्याहीन हैं,

तो वे सुगंधरहित केतकी के फूल की भाँति समाज में शोभा नहीं देते हैं। विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः, अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयस करं परम् 10. भावार्थ: विद्याभ्यास, तप, ज्ञान, इंद्रिय-संयम, अहिंसा और गुरुसेवा- ये जीवन में परम् कल्याणकारी हैं।

विद्या ददाति विनयं इति विनयाद् याति पात्रताम्, पात्र त्वाद्धनमाप्रोति धनाद्धर्मं ततः सुखम्। 11. भावार्थ: विद्या से विनय (नम्रता) आती है, विनय से पात्रता आती है, पात्रता से धन की प्राप्ति होती है, धन से धर्म की प्राप्ति होती है और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है। दानानां च समस्तानां चत्वार्येतानि भूतले, श्रेष्ठानि कन्यागोभूमिविद्या दानानि सर्वदा। 12.

भावार्थ : सब दानों में कन्यादान, गोदान, जन कल्याण के लिए भूमिदान और देश एवं समाज हित में

विद्यादान सर्वश्रेष्ठ हैं।

are: कणशचैव विद्यामर्थं च साधयेत्, क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम् । 13. भावार्थ: एक एक क्षण गँवाए बिना विद्या प्राप्त करनी चाहिए और एक एक कण बचा करके धन इकट्ठा करना चाहिए। क्षण गवानेवाले को विद्या कहाँ और कण को क्षुद्र समझनेवाले को धन कहाँ ? अतः

जीवन में हर क्षण अनमोल है। विद्या नाम नरस्य कीर्तिरतुला भाग्यक्षये, चाबयो धेनुः कामदुधा रतिश्च विरहे नेत्रं तृतीयं चसा। 14.

भावार्थ : विद्या अनुपम कीर्ति है, भाग्य का नाश होने पर वह आश्रय देती है, विद्या कामधेनु है, विद्या बिरह में रति समान है, विद्या हर इंसान का तीसरा नेत्र है। अतः विद्या की कभी अवहेलना न करें। सत्कारायतनं कुलस्य महिमा वैर्विना भूषणम् तस्मादन्यमुपेक्ष्य सर्वविषयं विद्याधिकारं कुरु। 15. भावार्थ : विद्या सत्कार का मंदिर है, विद्या कुल की महिमा है, विद्या बिना रतन का सुंदर आभूषण है. इसलिए अन्य सब विषयों को छोड़कर 'विद्यावान गुणी अति चातुर' बनो। नास्ति विद्या समं चक्षु नास्ति सत्य समं तपः, नास्ति राग समं दुखं नास्ति त्याग समं सुखं। 16.

भावार्थ : विद्या के समान कोई नेत्रा नहीं है, सत्य के समान कोई तपस्या नहीं है, आसक्ति के समान

कोई दुःख नहीं है और त्याग के समान कोई सुख नहीं है।

गुरुशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा, अथवा विद्यया विद्या चतुर्थो न उपलभ्यते । 17. भावार्थ: विद्या गुरु-सेवा से, पर्याप्त मानदेय देने से, अथवा विद्या के आदान-प्रदान से प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त विद्या प्राप्त करने का चौवा तरीका कोई नहीं है। अर्थातुराणां न सुखं न निद्रा कामातुराणां न भयं न खा विद्यातुराणां न सुखं न निद्रा क्षुधातुराणां न रुचि न बेला। 18.भावार्थ: अर्थातुर को सुख और निद्रा नहीं होते, कामातुर को भय और लज्जा नहीं होते, विद्यातुर को सुख व निद्रा नहीं होते, और भूख से पीड़ित व्यक्ति को स्वाद-रुचि या समय का ध्यान नहीं रहता है। पठतो नास्ति मूर्खत्वं अपनो नास्ति पातकम्, मौनिनः कलहो नास्ति न भयं चास्ति जाग्रतः । 19. भावार्थ : नैतिक विद्या अध्ययन करने वाले को मूर्खत्व नहीं आता, हरिनाम जपनेवाले को पातक (पाप) नहीं लगता, मौन रहने वाले का झगड़ा नहीं होता और जाग्रत रहने वाले को भय नहीं होता है। विद्या बितर्कों हि विज्ञानं स्मृतिः तत्परता क्रिया, यस्यैते षड्गुणास्तस्य ना साध्यमति वर्तते 20. भावार्थ: विद्या, तर्कशक्ति, विज्ञान, स्मृतिशक्ति, तत्परता और कार्यशीलता, ये छः जिसके पास है, उस

इंसान के जीवन में कुछ भी असाध्य नहीं होता है। गीती शीघ्री शिरः कम्पी तथा लिखित पाठकः, अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः । 21. भावार्थ: गाकर पढ़ना, शीघ्रता से पढ़ना, पढ़ते हुए सिर हिलाना, लिखा हुआ पढ़ना, अर्थ न जानकर

पढ़ना और धीमी आवाज होना ये खः पाठक के दोष हैं।

सद्विद्या यदि का चिन्ता वराकोदर पूरणे, शुकोऽप्यशनमाप्नोति रामरामेति च ब्रुवन् । 22. भावार्थ: नैतिक विद्या हो तो क्षुद्र पेट भरने की चिंता करने का कारण नहीं। तोता भी "राम राम" बोलने से अपनी उदर पूर्ति हेतु गृहस्वामी से बुराक पा ही लेता है। मातेव रक्षति पितेव हिते नियुंक्ते कान्तेव चापि रमयत्यपनीय खेदम्, लक्ष्मी तनोति वितनोति न दिक्षु कीर्तिम् किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या। 23.

भावार्थ : नैतिक विद्या माता की तरह रक्षण करती है, पिता की तरह हित करती है, गृहलक्ष्मी की तरह थकान दूर करके मन को आनंदित करती है, शोभा प्राप्त कराती है, और चारों दिशाओं में कीर्ति फैलाती है। सचमुच, कल्पवृक्ष की तरह यह नैतिक विद्या क्या क्या सिद्ध नहीं करती ? विद्याविनयोपेतो हरति न चेतांसि कस्य मनुजस्य,

कांचनमणिसंयोगो नो जनयति कस्य लोचनानन्दम् । 24. भावार्थ: विद्यावान और विनयी पुरुष किस मनुष्य का चित्त हरण नहीं करता ? सुवर्ण और मणि का संयोग किसकी आँखों को सुख नहीं देता ? अतः सदाचारी विद्यावान गुणी इंसान बनो, समाज और देश आपको अपने पवित्र मस्तिस्क पर विराजित करेगा। हर्तुर्न गोचरं याति दत्ता भवति विस्तृता, कल्पान्तेऽपि न या नश्येत् किमन्यद्विद्यया बिना। 25.

भावार्थ: जो नैतिक विद्या चोरों की नजर पड़ती नहीं, विद्यादान से हमेशा जिसका विस्तार होता है,

प्रलय काल में भी जिसका विनाश नहीं होता, उस नैतिक विद्या के अलावा अन्य कौन सा द्रव्य हो

सकता है ? अर्थात कोई नहीं ।

द्यूतं पुस्तकवाद्ये च नाटकेषु च सक्तिता, स्त्रियस्तन्द्रा च निन्द्रा च विद्याविघ्नकराणि षट् । 26. भावार्थ: जुआ, वाद्य, नाट्य कथा/फिल्म में आसक्ति, स्त्री या पुरुष, तंद्रा और निंद्रा ये छ: विद्या में

विरूप होते हैं।

अतः सभी विद्यार्थियों से अनुरोध है कि अपने लिए, अपने परिवार के लिए, अपने समाज के लिए और अपने देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए विद्यारूपी रतन को अपने विद्यार्थी जीवन में शालीनता से प्राप्त करें। मेरी आकांक्षा केवल आपके उज्ज्वल भविष्य की है, तुम्हारा उज्ज्वल भविष्य होगा तभी मेरी यह लेखनी सफल होगी।

ॐ शुभम् करोति कल्याणम् आरोग्यम् धन सम्पदा, मलीनम् बुद्धि विनाशाय शान्तिः ज्योतिम् नमस्तुते। 27.

भावार्थ : ॐ सर्वत्र शुभ हो, सबका कल्याण हो, सभी निरोगी रहें सबकी सुख समृद्धि हो, किसी भी इंसान के अन्तर्मन में मलीन बुद्धि पैदा न हो, शांति की ज्योति सभी के जीवन में निरंतर जलती रहे और अंत में ये सब कुछ प्रदान करने के लिए मैं परम पिता परमेश्वर को शत् शत् नमन करता हूँ।

सत्कर्म हमारा परम धर्म है हमें इसके पथ पर चलना है,

चंदा जैसी ज्योति लुटाना सूरज के समान जलना है।

शांति अमन का फहरे झण्डा बहे प्रेम की गंगा,

सबके मन में प्रीति जगी हो सबका घर हो चंगा ।

अपना एक तिरंगा, अपना एक तिरंगा, अपना एक तिरंगा ।

वन्दे मातरम्, वसुधैव कुटुम्बकम् - जय हिन्द, जय गोविन्द, जय भारत। 28.

डॉ. देवकी नन्दन शर्मा
संपादक प्रभारी,
नवोदय विद्यालय समिति (मुख्यालय), नोएडा

भारत का अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव

हमारा देश उत्सवों का देश हैं। यहाँ की समृद्ध परम्परा और सांस्कृतिक विरासत हमारी पहचान है और पूरे विश्व में भारतीय सभ्यता को आदर से देखा जाता है। भारत के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उत्सव मनाना, विज्ञान में रचनात्मकता को बढ़ावा देना, समृद्धि के लिए प्रौद्योगिकी और नवाचार भारत में फैलाने का उद्देश्य लेकर ही अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (IISF) विज्ञान एंव प्रौद्योगिकी मंत्रालय की एक पहल हैं। इस वर्ष 2021 में अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (IISF) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से विज्ञान भारती द्वारा गोआ में आयोजित किया गया। इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव के मुख्य स्तंभों से जुड़ी गतिविधियों को जानना रोचक अनुभव है जिनमें आजादी का अमृत महोत्सव, स्वास्थ्य, समृद्ध और सार्थक जीवन, अपने रचनात्मक कार्यक्रमों और गतिविधियों के माध्यम से विज्ञान प्रचार, देश में वैज्ञानिक बिरादरी और विदेश में एक मंच पर साथ आने के लिए प्रेरित करना, इसमें भारत और मानवता की भलाई शामिल हैं।

आईआईएसएफ की यात्रा की शुरुआत 2015 में दिल्ली में उद्घाटन समारोह से हुई थी। अपने छह IISF के संस्करण आयोजित किए गए हैं। 2020 में कोविड-19 महामारी के कारण एक गंभीर स्थिति उत्पन्न हुई जिसके कारण इस वर्ष के आयोजन के लिए चुनौती को ध्यान में रखकर वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। IISF का 7 वां संस्करण पणजी, गोवा में आयोजित किया गया था। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय और विज्ञान भारती सहित गोवा सरकार इसके आयोजक थे। IISF 2021 का राष्ट्रीय ध्रुवीय केंद्र और महासागर अनुसंधान (एनसीपीओआर), पृथ्वी विज्ञान (गोवा में स्थित एक संस्था) IISF 2021 को आयोजित करने वाली नोडल एजेंसी थी।

IISF 2021 की थीम विज्ञान, प्रौद्योगिकी और में रचनात्मकता समृद्ध भारत के लिए नवाचार है। आईआईएसएफ) 2021 में बारह कार्यक्रम होंगे जिनमें मेगा साइंस एंड टेक्नोलॉजी एक्सपो, गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड, विज्ञान साहित्य महोत्सव, इंजीनियरिंग छात्र महोत्सव प्रमुख हैं। जैसा कि हम सब जानते है की हम स्वतंत्रता के 75वें वर्ष को मना रहे हैं इस बात को ध्यान में रखकर सभी कार्यक्रम अमृत महोत्सव में आजादी की भावना और विचार को दर्शाएगा। हमारे प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी संदेश में कहा है की अब कोविड-19 के कारण खराब हुई स्तिथी धीरे-धीरे सामान्य हो रही है, जीवन के लिए और टीकाकरण अभियान में बड़ी सफलता मिली हैं और लोगों में विश्वास का स्तर बढ़ा है। लोग नियमित काम पर फिर से आ रहे हैं। इन कारकों को ध्यान में रखकर को संयुक्त में आयोजित किया जाता है इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव भौतिक और आभासी मोड दोनों में आयोजित किया जा रहा है ।

भारतीय अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान फिल्म महोत्सव (ISFF) जो की इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव के रूप में आयोजित हो रहा है उसका उद्देश्य नागरिकों के बीच विज्ञान की लोकप्रियता को बढ़ावा देना, प्रतिभाशाली युवा विज्ञान फिल्म निर्माताओं और विज्ञान को आकर्षित करना, उत्साही छात्रों के लिए एक अवसर प्रदान करता है यह मंच फिल्म निर्माताओं को विज्ञान की प्रक्रिया से जुड़ने के लिए फिल्मों के माध्यम से विज्ञान संचार के लिए उपयोगी हैं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्सव में प्रशंसित और पुरस्कार विजेता विदेशी और भारतीय फिल्में होंगी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के साथ-साथ IISF वेन्यू पर स्क्रीनिंग की गई। ISFF। की प्रतियोगिता दो श्रेणियों में होगी, अर्थात (i) 'विज्ञान' सबके लिए, और (11) इंडियन साइंस@751 फिल्म महोत्सव होगा।

विज्ञान साहित्य महोत्सव

विज्ञान साहित्य महोत्सव का उद्देश्य विज्ञान को लोकप्रिय बनाना है, वैज्ञानिक सोच विकसित करना, विचारों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देना गुणवत्तापूर्ण विज्ञान सामग्री तैयार करके प्रभावी ढंग से विचार-विमर्श करना विभिन्न माध्यमों से सामग्री को जनता तक पहुँचाना आदि इसके प्रमुख उद्देश्य है। इस वर्ष, विज्ञान साहित्य महोत्सव में वैज्ञानिकों और वैज्ञानिक साहित्य की भूमिका पर भी ध्यान केंद्रित करेंगे इस कार्यक्रम में मुख्य आकर्षण पैनल चर्चा, विज्ञान कवि सम्मेलन; विज्ञान नाटक / लोक कला; और कई ऑनलाइन और ऑफलाइन विज्ञान प्रतियोगिताएं आदि होंगे।

इंजीनियरिंग छात्र महोत्सव

इंजीनियरिंग छात्र महोत्सव तकनीकी फैलाने पर केंद्रित है छात्रों के मन में ज्ञान और उत्साह का समाज की भलाई के लिए प्रौद्योगिकी का विकास करना। इंजीनियरिंग की दुनिया से सर्वश्रेष्ठ दिमाग एक साथ लाना बातचीत का एक मंच उन्हें देना यह इसका उद्देश्य है । इस कार्यक्रम द्वारा तकनीकी के प्रदर्शन के लिए एक अवसर प्रदान करना, छात्रों द्वारा विकसित नवीन उत्पादों, परियोजनाओं, विचारों अच्छी तकनीक को इनक्यूबेट करना इसमें शामिल हैं।छात्रों को यूजर इंस्पायर्ड बेसिक अपनाने के लिए प्रेरित इस कार्यक्रम के माध्यम से किया जाएगा।

साइंस विलेज फेस्टिवल

साइंस विलेज फेस्टिवल भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव के प्रचलित फ्लैगशिप कार्यक्रम में से एक है। विज्ञान में आठवी और ग्यारहवीं कक्षा के ग्रामीण छात्र और समन्वयक-शिक्षक गोवा के ग्रामीण हिस्से से भाग ले रहे हैं । इस वर्ष विज्ञान विलेज फेस्टिवल हाइब्रिड मोड में आयोजित किया जाएगा जिसमें छात्र गोवा के ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों का व्यक्तिगत रूप से निर्माण करते हैं। वह प्रत्यक्ष रूप से भाग लेंगे, जबकि अन्य भागों के छात्र गोवा और अन्य राज्यों के वस्तुतः शामिल होंगे। साइंस विलेज में भारतीय वैज्ञानिकों के नाम पर तीन घर है। एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में विज्ञान गांव का उद्देश्य नए वैज्ञानिक देश को प्रदान करना, विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाना । प्रतिभागियों को व्यावहारिक वैज्ञानिक गतिविधियों जैसे अद्वितीय विज्ञान गतिविधियों से गुजरना होगा। इस वर्ष साइंस विलेज फेस्टिवल में आजादी का अमृत महोत्सव पर जोर हैं। भारतीय वैज्ञानिक समुदाय की भूमिका पर एक विशेष विषय के साथ स्वतंत्रता संग्राम और भारत की उपलब्धि में @75 आदि का समावेश हैं ।

पारंपरिक शिल्प और कारीगर महोत्सव

भारत की पारंपरिक अर्थव्यवस्था कृषि और हस्तशिल्प का मिश्रण और संतुलन थी, लेकिन अंग्रेजों के आने के साथ, यह संतुलन व्यवस्थित रूप से वध किया गया था। पारंपरिक हस्तशिल्प उद्योग अपने प्रतिष्ठित पद से लगभग 19वीं शताब्दी के प्रारंभ तक तेजी से खिसक गए। अंग्रेजों द्वारा औद्योगीकरण ने के मुख्य स्तंभों को कुचल दिया परंपरागत उद्योगों को अभी भी अपनी वर्तमान स्थिति से अपग्रेड करने की आवश्यकता है, वैज्ञानिक और तकनीकी हस्तक्षेपों के माध्यम से अधिक से अधिक प्रतिष्ठा यह भारत की स्वतंत्रता का 75 वां वर्ष है और काम, कलात्मक को उजागर करने के लिए सबसे उपयुक्त समय है।

खेलों और खिलौनों का त्योहार

खेल और खिलौने संबंधी ज्ञान प्रदान करने के लिए विज्ञान सबसे शक्तिशाली उपकरण है। विशेष रूप से विज्ञान, आनंदमय और मनोरंजक तरीकों से मूल्य रचनात्मकता और कल्पना के पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं खासकर युवा और कोमल दिमाग के बहुत सारे विज्ञान शामिल है। ऐसे उत्सव में सम्मिलित होकर अपने देश को गौरांवित करे और भविष्य में अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (IISF) और अधिक सफल बनाये यही सभी से प्राथना है।

जय विज्ञान जय भारत

सचिन सी नरवडिया
वैज्ञानिक डी,
विज्ञान प्रसार, नोएडा

"कृत्रिम बुद्धिमत्ता" मानवता के लिए अभिशाप या वरदान

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) मशीनों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली बुद्धिमता है, जो मनुष्यों व जानवरों द्वारा प्रदर्शित प्राकृतिक बुद्धिमता के विपरीत है। वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमता कंप्यूटर विज्ञान की एक व्यापक एवं महत्वपूर्ण शाखा है, जो ऐसे कार्यों को करने में सक्षम स्मार्ट मशीनों के निर्माण से संबंधित है, जिनमें आमतौर पर मानव बुद्धि की आवश्यकता होती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रकार:

कृत्रिम बुद्धिमता को मुख्यतः दो श्रेणियों में रख सकते हैं -

श्रेणी 1

सीमित कृत्रिम बुद्धिमत्ता ये सिर्फ एकल कार्य कर सकते हैं। उदाहरण - आवाज की पहचान करना।

सामान्य कृत्रिम बुद्धिमता इस तरह की बुद्धिमत्ता में मानव जैसे कार्यों को करने की क्षमता होती है। अभी तक, ऐसी कोई मशील विकसित नहीं हुई है।

उत्कृष्ट कृत्रिम बुद्धिमता एआई एक इंसान से बेहतर प्रदर्शन करने की क्षमता रखती है। हालांकि इस पर अभी भी शोध जारी है।

श्रेणी 2

प्रतिक्रियाशील मशीने (Reactive Machines)- यह मशीन किसी परिस्थिति के प्रति तेजी से प्रतिक्रिया करती है। यह वर्तमान या भविष्य के उपयोग के लिए किसी भी डेटा को स्टोर करने में सक्षम नहीं है। यह केवल फीड किए गए डेट के अनुसार काम करती है।

सीमित स्मरणशक्ति (Limited Memory)- यह मशीन एक सीमित अवधि के लिए कम मात्रा में डेटा इकठ्ठा कर सकती है। इसके उदाहरण: सेल्फ ड्राइविंग कार और वीडियो गेम है।

मस्तिष्क का सिद्धांत (Theory of Mind)- ये ऐसी मशीनें हैं जो मानवीय भावनाओं को समझती हैं, ये काफी ज्यादा समझदार होती है। हालांकि इस प्रकार की मशीनें अभी तक विकसित नहीं हुई हैं ।

आत्म जागरूकता (Self Awareness)- इस प्रकार की मशीने इंसानों की तुलना में बेहतर काम करने का गुण रखती हैं। ये दूसरी बात है कि आज की तारीख तक ऐसी कोई मशीन विकसित नहीं की गई है। हालाँकि इस दिशा में लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

कृत्रिम बुद्धिमता की तकनीक पर द्वितीय विश्व युद्ध के बाद काम शुरू हुआ। वर्ष 1956 में पहली बार दुनिया कृत्रिम बुद्धिमता जैसे शब्द से अवगत हुई। कृत्रिम बुद्धिमता के क्षेत्र में किए जा रहे अनुसंधान, भविष्य के लिए कई आइंस्टीन और एडिसन जैसे चमत्कारिक मस्तिष्क तैयार करने के लिए एक प्लेटफार्म साबित हो सकती है। प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री प्रो स्टीफन हॉकिन्स ने एक साक्षात्कार में कहा था कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक एक दिन मानव सभ्यता को खत्म कर सकती है। उनके इस बयान के बाद इस तकनीक पर दुनियाभर में विशेषज्ञों के बीच बहस छिड़ गयी है, जैसे कि यह तकनीक किस मुकाम तक पहुंची है और भविष्य में लोगों की जिंदगी को कैसे प्रभावित करेगी, जैसे सवालों की जाँच-पड़ताल की कोशिश जारी है। 'बुद्धिमत्ता' ही एक ऐसा शब्द है जो समूचे ब्रह्मांड में मानव को अन्य जीवों से बिल्कुल अलग एवं सर्वश्रेष्ठ बनाती है लेकिन, मानव मस्तिष्क के दिशा-निर्देशों पर काम करनेवाली मशीनें ही यदि खुद के दिमाग पर निर्भर हो जाये, तो निश्चित तौर एक नये युग की शुरुआत हो सकती हैं। मानव सभ्यता द्वारा अब तक किया गया विकास चाहे वह तकनीकी विकास हो, सामाजिक विकास हो, आर्थिक विकास हो या फिर वैज्ञानिक विकास हो, ये सभी हमारे पूर्वजों की सोच और उपलब्धियों का ही प्रतिफल है। तकनीकी विकास के क्रम में आज हम ऐसे मुकाम पर हैं, जहां से तकनीकी विशेषज्ञों को यह विश्वास हो चला है कि निकट भविष्य में मानव मस्तिष्क के सारे क्रिया- कलाप मशीनी रूप धारण कर लेंगे।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए तकनीकी विशेषज्ञ एलॉन मस्क ने कुछ दिनों पहले मैसाच्युसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में आयोजित एक कान्फ्रेंस में चिंता जाहिर करते हुए कहा था कि 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस नाभिकीय हथियारों से भी ज्यादा खतरनाक है। उन्होंने इस पर राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नियमन की भी वकालत की है। फ्यूचर ऑफ इंस्टीट्यूट यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड के डायरेक्टर व स्वीडिश फिलॉसोफर लिक बॉस्ट्रम ने भी अपनी पुस्तक 'सुपर इंटेलिजेंस'

में स्पष्ट किया है कि एक बार मशीन की बुद्धिमता मानव मस्तिष्क पर प्रभावी होने पर एक साथ कई बड़ी समस्याएं जन्म ले सकती है। हालांकि, ऑर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लेकर दूसरा पहलू भी है। कुछ तकनीकी विशेषज्ञ इसे मानव विकास का नया अध्याय मानते हैं। अब तक के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक के विकास की बात करें तो मशीनी दिमाग के लिए शतरंज खेलना, गणितीय प्रमेयों को हल करना, कविताएं लिखना, भीड़-भाड़ जैसी जगहों पर कार ड्राइविंग करना बेहद आसान हो चुका है।

कृत्रिम बुद्धिमता मानव की विचारशील प्रक्रियाओं की पुनर्निर्माण प्रक्रिया है, यानी मानव निर्मित ऐसी मशीन जो बौद्धिक क्षमताओं से पूरी तरह युक्त हो। रोबोटिक्स, विज्ञान और तकनीक की ऐसी शाखा है, जो उपर्युक्त तकनीक के बेहद करीब है। कंप्यूटर विभिन्न जटिल समस्याओं को एक साथ एक छत पर, कर पाने में सक्षम है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता रोबोट या कंप्यूटर, ह्यूमन इनपुट या सेंसर के माध्यम से परिस्थितियों का आकलन करते हैं तथा एकत्रित सूचनाओं के आधार पर कंप्यूटर या रोबोट काम करता है यानी प्रोग्रामिंग के आधार पर समस्याओं का हल निकालता है। लेकिन अत्याधुनिक कंप्यूटर इंसान की तरह सूचनाओं को पढ़ पाने और सीखने में भी कामयाब हो रहा है।

जैसे मानव मस्तिष्क लाखों-करोड़ों न्यूरॉन से बना होता है। इसी प्रकार से न्यूरॉन तकनीक पर आधारित कुछ विशेष प्रकार के रोबोट सामाजिक तौर पर काम कर पाने में सक्षम होते हैं और कुछ उन्नत रोबोट मानव क्रिया- कलापों और आवाजों को भी पहचान पाने में सक्षम होते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि मानव और मशीन का यह पारस्परिक मेल भविष्य में इंसान की तरह काम कर पाने वाली मशीन की बुनियाद बनेगा।

अब तक विकसित कृत्रिम बुद्धिमता के शुरुआती रूप बेहद उपयोगी साबित हो चुके है, लेकिन डर इस बात का है कि भविष्य में इसका असर ऐसी मशीन के रूप में हमारे बीच आ सकता है, जो इंसान जितनी या उससे भी ज्यादा बुद्धिमान हो | तब एक दिन ऐसा होना संभव है कि कृत्रिम बुद्धिमता (एआई) अपना नियंत्रण खुद अपने हाथ में ले लेगा और खुद को फिर से तैयार करेगा और उल्लेखनीय रूप से हमेशा बढ़ता ही जायेगा जैसे कि मानव भावनाओं, दुख व सुख को महसूस करना। चूंकि, जैविक रूप से इंसान का विकास धीमा होता है, लिहाजा वह (इंसान) ऐसे सिस्टम (कृत्रिम बुद्धिमता) से प्रतियोगिता नहीं कर पायेगा और उसके मुकाबले में पिछड़ जायेगा। हालांकि कुछ अन्य वैज्ञानिक एआई कृत्रिम बुद्धिमत्ता) को लेकर बहुत आशंकित नहीं है। क्लेवरबोट के निर्माता सेलो कारपेंटर कहते हैं कि हम लंबे समय तक तकनीक के नियंत्रणकर्ता बने रहेंगे और तमाम समस्याओं को सुलझाने में इसकी क्षमताओं का उपयोग करेंगे।

क्लेवरबॉट का सॉफ्टवेयर अपनी पिछली बातचीत से सीखता है। इससे कई लोग यह धोखा खा जाते हैं कि वह किसी इंसान से बात कर रहे हैं। कारपेंटर कहते हैं कि हम पूरी कृत्रिम बुद्धिमता को विकसित करने के लिए जरूरी कंप्यूटिंग क्षमता हासिल करने से अभी बहुत दूर हैं। हालांकि, उन्हें विश्वास है कि कुछ दशकों में यह भी संभव हो ही जायेगा।

निष्कर्ष : तकनीक निरंतर रूप से आगे बढ़ती जा रही हैं। यह इस बात को साबित कर रहा हैं कि ये मानव जाति के लिए यह एक वरदान हैं। तकनीक किसी भी काम को सरल बनाती है और आगे चलकर मानव तरीके से किसी भी समस्या को हल करने में मदद भी करती है। हर तकनीक के अपने सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव होते हैं और इसी तरह से कृत्रिम बुद्धिमत्ता के भी अपने सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव हैं। विभिन्न उद्योगों और अनुसंधान क्षेत्रों में इसका काफी महत्व होता है लेकिन गलत तरीके से इस्तेमाल किए जाने पर यही कृत्रिम बुद्धिमत्ता अभिशाप भी साबित होता है और मानव जाति के लिए खतरा बन सकता है ।

अविनाश कुमार
उप निदेशक,
सॉफ्टवेयर टेक्नालजी पार्क्स ऑफ़ इंडिया, नोएडा

ओलंपिक खेलों में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन

आधुनिक ओलंपिक खेलों की शुरुआत 1896 में यूनान (एथेंस) में हुई। इन खेलों का आयोजन एवं नियंत्रण अन्तरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति करती है। इस प्रतियोगिता के ध्यज में प्रतीक के रूप में पाँच चक्र एक-दूसरे से मिले हुए दर्शाए गए है, जो विश्व के पाँच महादीपों का प्रतिनिधित्व करने के साथ ही विश्वव्यापी खेल भावना के भी सूचक हैं। इन पाँच चक्रों का रंग नीला, पीला, काला, हरा एवं लाल होता है। प्रत्येक रंग एक महाद्वीप का प्रतीक होता है। इनमें नीला चक्र यूरोप पीला चक्र एशिया, लाल चक्र अमेरिका, काला चक्र अफ्रीका और हरा चक्र ऑस्ट्रेलिया का प्रतिनिधित्व करता है। वर्ष 1916, 1940 और 1944 में विश्व युद्ध के कारण ओलंपिक नहीं हुए।

दुनियाभर में खेलों के महाकुम 32वें ओलंपिक (विलंबित 2020 ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेल) खेलों की शुरुआत की घोषणा जापान के सम्राट नारुहितो ने 23 जुलाई 2021 को टोक्यो के ओलंपिक स्टेडियम में की। यह उद्घाटन समारोह एथेंस में 1896 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेलों की 125वीं वर्षगांठ पर आयोजित किया गया और इसका विषय थाः भावनाओं से एकजुट होना। आयोजकों के अनुसार जिसका आशय खेल की भूमिका और ओलंपिक खेलों के मूल्य की पुष्टि करना था। वैश्विक महामारी कोविड-19 के कारण 2020 के खेलों को 2021 तक के लिए स्थगित कर दिया गया था, और इसी को संदर्भित करते हुए आयोजकों द्वारा ओलंपिक खेलों का एक विषय आगे बढ़ना रखा गया था। ऐसा पहली बार हुआ कि ओलंपिक खेल की निर्धारित तिथियों को युद्ध के अलावा किसी अन्य कारण (महामारी) से पुनर्निर्धारित करना पड़ा था। इन खेलों की एक अन्य थीम लिंग संतुलन या लैंगिक समानता को ध्यान में रखते हुए अमेरिका, चीन, यूनाईटेड किंगडम, रूसी ओलंपिक समिति के बैनर तले खेलने वाले रूस, आस्ट्रेलिया, कनाडा सहित अनेक देशों के दल में पुरुष खिलाडियों की तुलना में महिला खिलाडियों की संख्या अधिक थी। उद्घाटन समारोह के दौरान राष्ट्रों की परेड के दौरान प्रत्येक भाग लेने वाली टीम के एथलीटों और अधिकारियों ने अपने ध्वजवाहक और तख्तीधारक की अगुवाई मे ओलंपिक स्टेडियम में प्रवेश किया। लंगिक समानता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पहली बार प्रत्येक टीम के पास दो ध्वजवाहको एक पुरुष और एक महिला को अनुमति देने का विकल्प था।

परंपरा के अनुसार प्राचीन ओलम्पिक के जनक यूनान का दल खिलाड़ियों की परेड में सबसे पहले आया, इसके बाद आईओसी शरणार्थी ओलंपिक टीम आई जिसमें कई देशों के शरणार्थी शामिल थे। फिर मेजबान देश जापान और अगले दो ओलंपिक खेलों के मेजबान फ्रांस एवं अमेरिका को छोड़कर अन्य सभी देशों ने जापानी भाषा में उनके नाम के आधार पर परेड में हिस्सा लिया। सबसे आखिर में जापान की टीम आई, उससे पहले 2024 के ओलंपिक खेलों के मेजबान फ्रांस और उससे भी पहले 2028 के ओलंपिक खेलों के मेजबान अमेरिका की टीम आई। भारतीय दल की अगुवाई मुक्केबाज मेरी कॉम और हॉकी (पुरुष) टीम के कप्तान मनप्रीत सिंह ने की। ओलंपिक खेलों में भारत का अब तक का यह सबसे बड़ा दल था जिसमें 53 महिला खिलाड़ियों सहित कुल 121 खिलाड़ीइस बार के ओलंपिक खेलों में भी भारत का प्रदर्शन अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहा, तथापि संतोषजनक बात यह रही कि भारत ने 2016 के रियो ओलंपिक खेलों तक कुल जीते पदकों (28) के पच्चीस प्रतिशत पदक (7) 2020 के टोक्यो ओलंपिक खेलों में जीते। भारत ने 1896, 1904, 1908 एवं 1912 के ओलंपिक खेलों में भाग नहीं लिया। 1920, 1924, 1976, 1984, 1988 और 1992 के ओलंपिक खेलों में भारतीय खिलाड़ियों को कोई सफलता नहीं मिली। पेरिस में हुए 1900 के ओलंपिक खेलों में भारत की ओर से एक ब्रिटिश नागरिक नॉर्मन प्रिचार्ड ने प्रतिभागिता की और दो रजत पदक पाने में सफलता पाई। 1928 के एम्सटर्डम ओलंपिक खेलों से भारतीय हॉकी के स्वर्णिम युग की शुरुआत हुई जब भारतीय हॉकी टीम ने पहली बार ओलंपिक खेलों में भाग लेते हुए स्वर्ण पदक जीता। हॉकी टीम द्वारा स्वर्ण पदक जीतने का यह सिलसिला 1956 के मेलबर्न ओलंपिक खेलों तक जारी रहा और इस प्रकार लगातार छह स्वर्ण पदक जीते। उसके बाद के ओलंपिक खेलों में हॉकी टीम ने 1960 में रजत पदक, 1964 एवं 1980 में स्वर्ण पदक, तथा 1968, 1972 एवं 2020 के ओलंपिक खेलों में कांस्य पदक जीतने में सफलता पाई। इस प्रकार भारतीय हॉकी टीम ने ओलंपिक खेलों में 08 स्वर्ण, एक रजत एवं 03 कांस्य पदकों सहित कुल 12 पदक जीते हैं। व्यक्तिगत स्पर्धाओं में अभी तक भारत कुल 23 पदक जीत पाया है। विभिन्न स्पर्धाओं में पदक जीतने वाले भारतीय खिलाड़ियों /टीमों के विवरण इस प्रकार हैं:

क्र सं	ओलंपिक	स्वर्ण पदक विजेता	रजत पदक विजेता	कांस्य पदक विजेता
1	1900 पेरिस		नार्मन प्रिचार्ड (2 पदक- 200 मीटर दौड़ एवं 200 मीटर बाधा दौड़	
2	1928 एम्सटर्डम	हॉकी (पुरुष)	-	-

3	1932 लॉस एंजेलिस	हॉकी (पुरुष)	-	-
4	1936बर्लिन	हॉकी (पुरुष)	-	-
5	1948 लंदन	हॉकी (पुरुष)	-	-
6	1952हेलिंस्की	हॉकी (पुरुष)	-	के. डी. जाधव (कुश्ती)
7	1956 मेलबर्न	हॉकी (पुरुष)	-	-
8	1960 रोम	-	हॉकी (पुरुष)	-
9	1964 टोक्यो	हॉकी (पुरुष)	-	-
10	1968 मेक्सिको	-	-	हॉकी (पुरुष)
11	1972 म्यूनिख	-	-	हॉकी (पुरुष)
12	1980 मास्को	हॉकी (पुरुष)	-	-
13	1996 एटलांटा	-	-	लिएंडर पेस (टेनिस)
14	2000 सिडनी	-	-	कर्णम मल्लेश्वरी (भारोत्तोलन)
15	2004एथेंस	-	राज्यवर्धन सिंह राठोड़ (निशानेबाजी)	-
16	2008 बीजिंग	निशानेबाजी (अभिनव ब्रिन्द्रा)	-	विजेंद्र सिंह (मुक्केबाजी) सुशील कुमार (कुश्ती)
17	2012 लंदन	-	सुशील कुमार (कुश्ती विजय कुमार (निशानेबाजी)	साइना नेहवाल (बेडमिन्टन) मैरिकोम (मुक्केबाजी) योगेश्वर दत्त (कुश्ती) गगन नारंग (निशानेबाजी)
18	2016 रियो डि जेनेरियो	-	पी वी सिंधू (बेडमिन्टन)	साक्षी मालिक (कुश्ती)

19	2021 टोक्यो	भाला फेंक (नीरज चोपड़ा)	मीराबाई चानू (भारोत्तोलन) रवि दहिया (कुश्ती)	पी वी सिंधू (बेडमिन्टन) बजरंग पूनिया (कुश्ती) हॉकी (पुरुष) लवलीना बोरगोहेन (मुक्केबाजी)

टोक्यो ओलंपिक में भारत के चार स्वर्ण पदकों सहित 17 पदक जीतने का अनुमान लगाया गया था। इसके तहत चार स्वर्ण, पाँच रजत और आठ कांस्य पदक मिलने की बात कही गई थी। यह अनुमान ओलंपिक एनालिस्ट कंपनी ग्रेसनोट (Gracenote) मे लगाया था। यह कंपनी दुनिया के बड़े खेल टूर्नामेंट को स्टेटिस्टिकल डेटा उपलब्ध कराती है। ग्रेसनोट ने कहा था कि उनके मॉडल के हिसाब से भारत को टोक्यो ओलंपिक में निशानेबाजी में आठ, मुक्केबाजी में चार कुश्ती में तीन और तीरंदाजी व भारोत्तोलन में 1-1 पदक मिलेगा। कंपनी ने पहले के ओलंपिक, विश्व चौपियनशिप और विश्व कप के प्रदर्शन के आधार पर यह अनुमान लगाया था। ग्रेसनोट ने 2016 के रियो ओलंपिक के दौरान टॉप-तीन देशों के बारे में अनुमान लगाया था जो सही साबित हुए थे। ग्रेसनोट ने टोक्यों ओलंपिक 2020 में अमेरिका, चीन, रूसी ओलंपिक समिति और जापान को पदक जीतने वाले टॉप चार देशों के रूप में रखा था। इसके तहत अमेरिका को 43 स्वर्ण सहित कुल 114 पदक चीन को 38 स्वर्ण सहित कुल 85 पदक मिलने की बात कही गई थी। वहीं जापान को 34 स्वर्ण पदक मिलने की बात कही गई थी और टोक्यो ओलंपिक, 2020 में पहले दो स्थान प्राप्त करने वाले अमेरिका और चीन के मामले में ग्रेसनोट के अनुमान काफी हद तक सही साबित हुए थे। इन खेलों में अमेरिका ने 39 स्वर्ण पदकों सहित कुल 113 पदक जबकि चीन ने 38 स्वर्ण पदको संहित कुल 88 पदक जीते।

हालांकि भारत के संबंध में ग्रेसनोट के अनुमान सही साबित नहीं हो पाए या या कहें कि भारतीय खिलाड़ी 135 करोड़ देशवासियों की उम्मीदों का बोझ सहन नहीं कर सके और ग्रेसनोट के अनुमानों पर खरे नहीं उतर सके। भारत के संबंध में ग्रेसनोट ने कुश्ती में बजरंग पूनिया और विनेश फोगाट, निशानेबाजी में एलावेनिल बलारिवान और 10 मीटर एयर पिस्टल मिक्स्ट टीम इवेंट में स्वर्ण पदक मिलने बात कही थी। वहीं मुक्केबाजी में अमित पंघाल निशानेबाजी में सारन चौधरी मनु भाकर और 10 मीटर एयर राइफल मिक्स्ड टीम के साथ ही भारोत्तोलन में मीराबाई चानू के रजत पदक जीतने का अनुमान लगाया था। ग्रेसनोट द्वारा तीरंदाजी में रिकर्व पुरुष टीम, मुक्केबाजी में एमसी मेरीकोम, मनीष कौशिक, लवलीना बोरगोहेन, निशानेबाजी में यशस्विनी देसवाल, दिव्यांश पवार, कुश्ती में दीपक पूनिया और चिंकी यादव के कांस्य पदक जीतने की बात कही गयी थी। एक खेलप्रेमी भारतीय होने के नाते और खिलाडियों एवं टीम के पूर्व प्रदर्शन को देखते हुए मैंने इस सूची में तीन और नाम पी वी सिंधु (बैडमिटन), नीरज चोपडा (एथलेटिक्स) और पुरुष हॉकी टीम को भी शामिल किया था। ग्रेसनोट के अनुमान केवल मीराबाई चानू और लवलीना बोरगोहेन के संबंध में ही सही सही साबित हुए जबकि बजरंग पूनिया के संबंध में आशिक तौर पर ही सही साबित हुए क्योंकि बजरंग पूनिया ने स्वर्ण पदक की जगह कांस्य पदक जीता।

2020 के टोक्यो ओलंपिक खेलों में केवल सात भारतीय खिलाड़ी/ टीम, एथलेटिक्स (माला फेंक) में नीरज चोपड़ा (स्वर्ण पदक), मारोत्तोलन में मीराबाई चानू (रजत पदक), कुश्ती में रवि दहिया (रजत पदक), बैडमिंटन में पी. वी. सिंमू (कास्य पदक), मुक्केबाजी में लवलीना बोरगोहेन (कांस्य पदक) कुश्ती में बजरंग पूनिया (कांस्य पदक) और पुरुष हॉकी टीम (कांस्य पदक) पदक जीतने में सफल रहे मंजिल के पास पहुंचने पर भी इसे हासिल न कर पा सकने वाले अन्य खिलाडियों / टीम के नाम इस प्रकार है सौरभ चौधरी (निशानेबाजी) महिला हॉकी टीम, दीपक पूनिया (कुश्ती) कमलप्रीत कौर (धक्का फेंक) और अदिति अशोक (गोल्फ) उपरोक्त खिलाड़ियों टीमों का 2020- टोक्यो ओलंपिक खेलों में प्रदर्शन निम्न प्रकार रहा

नीरज चोपड़ा भाला फेंक स्वर्ण पदक 07 अगस्त 2021 को नीरज चोपड़ा ने एथलेटिक्स की माला फेंक स्पर्धा में स्वर्ण पदक (87.58 मीटर) जीत कर एथलेटिक्स में 121 वर्ष बाद पदक दिलाकर हिंदुस्तान को गौरवान्वित किया। नीरज को ओलंपिक से पहले ही पदक का प्रबल दावेदार माना जा रहा था और इस 23 वर्षीय एथलीट में अपेक्षानुरूप प्रदर्शन करते हुए क्वालिफिकेशन में अपने पहले प्रयास में 86.59 मीटर भाला फेंककर शीर्ष पर रहकर फाइनल में जगह बनाई थी। फाइनल में अपने पहले प्रयास में 87.03 मीटर भाला फेंका था और दूसरे प्रयास में नीरा में 87.58 मीटर भाला फेंका जो निर्णायक साबित हुआ। यह शुरू से अंत तक पहले स्थान पर ही रहे थे। नीरज चोपड़ा किसी व्यक्तिगत स्पर्धा में सबसे कम उम्र के भारतीय ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता है और अपने ओलंपिक पदार्पण में स्वर्ण पदक जीतने वाले एकमात्र व्यक्ति है। इससे पहले नीरज ने 2016 में विश्व जूनियर चैंपियनशिप में 80.48 मीटर का धो कर रिकॉर्ड बनाया था। 2018 में जकार्ता में एशियाई खेलों में 8806 मीटर का प्रोपर नया रिकॉर्ड बनाया। नीरज ने पटियाला में 86.07 मीटर भाला फेंककर नया रिकॉर्ड बनाया। वह अपनी दाहिनी कोहनी में चोट के कारण

दोहा में 2019 विश्व चैंपियनशिप से चूक गए थे। 16 महीने के अंतराल के बाद चोपड़ा ने जनवरी 2020 में दक्षिण अफ्रीका के पोटपेक्ट्रम में एथलेटिक्स सेंट्रल नॉर्थ वेस्ट लीग में 87.86 मीटर के विजयीको के साथ अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में वापसी की जिससे यह टोक्यो ओलंपिक के लिए क्वालिफाई (न्यूनतम 85 मीटर करने में सफल रहे। 05 मार्च 2021 को चोपड़ा ने फिर से 88.07 मीटर के यो के साथ अपना ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ा जिसके परिणामस्वरूप उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तीसरी रैंक प्राप्त हुई।

मीराबाई चानू मारोत्तोलन (49 किलोग्राम भार वर्ग) - रजत पदक खेलों के पहले ही दिन - 24 जुलाई 2021 को कुल नार 202 किलोग्राम (67 स्नैच प्लस 115 क्लीन एंड जर्क) उठाकर मीराबाई ने रजत पदक जीतते हुए भारत को टोक्यो ओलंपिक खेलों में शानदार शुरुआत दिलाई। हालांकि क्लीन एंड जर्क में चानू अपने विश्व रिकॉर्ड (119 किलोग्राम) की बराबरी नहीं की पाई दुर्भाग्यवश 2016 के रियो ओलंपिक खेलों में वह अपनी तीनों प्रयासों में असफल रही थी किंतु एक वर्ष बाद ही चानू ने विश्व चैंपियनशप, 2017 अनाम में स्वर्ण पदक जीतकर अपना खोया हुआ आत्मविश्वास पूरी तरह वापस हासिल कर लिया था। चानू ने राष्ट्रमंडल खेल 2018: गोल्ड कोस्ट में भी स्वर्ण पदक हासिल किया

रवि दहिया, कुश्ती (57 किलोग्राम भार वर्ग) रजत पदक रवि दहिया फाइनल में दूसरी वरीयता प्राप्त रूसी आलंपिक समिति के पहलवान जावुर युगुऐब से 4-7 से मात खा गए थे और उन्हें रजत से संतोष करना पड़ा था। रवि दहिया में कजाकिस्तान के रिसलाम सानायेव को हराकर गोल्ड मेडल मैच में पहुंचे थे। उस मैच में एक समय रवि 9-2 से पीछे चल रहे थे, लेकिन अंतिम मिनट में वह अपनी मानसिक शक्ति का परिचय देते हुए अपने प्रतिद्वंद्वी को डबल लेग अटैक से पटखनी देने में कामयाब रहे और विक्ट्री बाई फॉल से विजेता घोषित किए गए। रवि दहिया द्वारा पूर्व में जीते गए पदक इस प्रकार है विश्व चैंपियनशिप 2019 नूर सुल्तान कास्य पदक एशियाई चैंपियनशिप 2021, अल्माटी स्वर्ण पदक, एशियाई चैंपियनशिप, 2020 नई दिल्ली. स्वर्ण पदक विश्व अटर-23 चैंपियनशिप 2018 मुखारेस्ट रजत पदक, विश्व जूनियर चैंपियनशिप 2015, सल्वाडोर रजत पदक

पी. वी. सिंधू बैडमिंटन कांस्य पदक रियो ओलंपिक में रजत पदक जीतने वाली पी वी सिंधु ने टोक्यो ओलंपिक में तीसरे स्थान के लिए हुए मैच में चीन की बिग जियाओ को 21-13 और 21-15 से हराकर कास्य पदक जीता और इस प्रकार सुशील कुमार के बाद दो ओलंपिक पदक जीतने वाली दूसरी भारतीय खिलाड़ी बनी।। रियो ओलंपिक (2016) के बाद पी वी सिंधू द्वारा जीते गए पदक इस प्रकार है विश्व चैंपियनशिप 2019. बारोल- स्वर्ण पदक, विश्व चैंपियनशिप 2018: नान्जिग रजत पदक, विश्व चैंपियनशिप 2018, ग्लासगो एशियाई खेल 2018, जकार्ता रजत पदक, राष्ट्रमंडल खेल 2018, गोल्ड कोस्ट, एकल में रजत पदक एवं मिश्रित युगल में स्वर्ण पदक रजत पदक

लवलीना बोरगोहेन, मुक्केबाजी कांस्य पदकः लवलीना 69 किलो वेल्टरवेट कैटिगरी के सेमी फाइनल में तुर्की की विश्व नंबर एक मुक्केबाज बुसेनाज सुरमेनेली से हार गई थीं। उन्हें कास्य पदक मिला। विश्व नंबर 3 लवलीना ने क्वार्टर फाइनल में विश्व नंबर 2 चीनी ताइपे की चेन निएन चिन को 4-1 से हराकर यह सुनिश्चित कर दिया था कि यह कम से कम कास्य पदक अवश्य जीतेगी। भारत की 9 साल के बाद ओलंपिक मुक्केबाजी में पदक हासिल हुआ। असम के गोलाघाट जिले की लवलीना बॉक्सिंग में ऑलंपिक पदक हासिल करने वाली तीसरी भारतीय खिलाड़ी हैं। उनसे पहले विजेंदर सिंह ने 2008 बीजिंग ओलंपिक और मेरी कॉम ने 2012 लदन ओलंपिक में भारत के लिए मुक्केबाजी में कांस्य पदक हासिल किए थे। अवलीमा बोरगोहेन द्वारा पूर्व में जीते गए पदक इस प्रकार है

विश्व चैंपियनशिप 2019, उलान उडे कास्य पदक विश्व चैंपियनशिप 2018, नई दिल्ली - कास्य पदक, एशियाई चैंपियनशिप 2021, दुबई कास्य पदक एशियाई चैंपियनशिप 2017 हो ची मिन्ह सिटी कारा पदकः ।

बजरंग पूनिया कुस्ती (65 किलोग्राम भार वर्ग) कास्य पदक तीसरे स्थान के मुकाबले में बजरंग ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कजाखस्तान के दोलत नियाजोव को एकतरफा मुकाबले में 8--0 से शिकस्त दी। बजरंग पूनिया का प्रदर्शन हमेशा बहुत ही शानदार रहा है। बजरंग ने विश्व चैंपियनशिप में एक रजत एवं दो कास्य पदका एशियाई चैंपियनशिप में दो स्वर्ण तीन रजत और दो कास्य पदक एशियाई खेलों में एक स्वर्ण एवं एक रजत पदक राष्ट्रमंडल खेलों में एक स्वर्ण और एक रजत पदक जीते हैं। भारत को कुश्ती में पहला पदक दिलाने वाले कसाया डी जाधव थे। उन्होंने 1952 के हेलसिंकी ऑलंपिक खेलों में कास्य पदक जीता था। उसके बाद सुशील ने 2008 बीजिंग में कास्य और 2012 में लंदन में रजत पदक जबकि योगेश्वर ने कास्य पदक जीता था। साक्षी मलिक ने रियो ओलंपिक में 2016 में कास्य पदक जीता था। टोक्यो में इससे पहले रवि दहिया ने रजत पदक जीता था। इस तरह बजरंग के पदक के साथ ओलंपिक खेलों में कुश्ती में 69 साल में सात पदक हुए।

पुरूष हॉकी टीम कांस्य पदक तीसरे स्थान के लिए हुए मैच में भारतीय हॉकी टीम ने जर्मनी को 5-4 से हराया और इस प्रकार 41 वर्ष बाद पहला ओलपिक पदक जीता। खास बात यह रही कि भारतीय हॉकी टीम एक समय 1-3 से पीछे थी लेकिन उसके बाद भारतीय जाबाजी ने शानदार वापसी करते हुए देशवासियों को जश्न मनाने का मौका दिया यह भी एक उत्साहजनक तथ्य है कि 19 सदस्यीय हॉकी टीम में 13 खिलाड़ियों ने पहली बार ओलंपिक खेलों में हिस्सा लिया था। भारतीय हॉकी टीम चैंपियन ट्रॉफी के अंतिम दो संस्करणा 2018 में हलिंद एवं 2016 में लंदन में उप-विजेता और 2018-19 में भुवनेश्वर में आयोजित हॉकी सिरीज में विजेता रही थी मनप्रीत सिंह की अगुवाई वाली टीम ने मार्च 2020 में एफआईएच हॉकी प्रो. लीग 2020 के दूसरे संस्करण के पहले तीन राउंड में अपने शानदार प्रदर्शन के दम पर विश्व रैंकिंग में चौथा स्थान हासिल किया था।।

सौरभ चौधरी, निषानेबाजी (10 मीटर एअर पिस्टल): वर्ष 2019 से पाँच वर्ल्ड कप में दो स्वर्ण, एक रजत एवं दो • कास्य पदक जीतने वाले सीरम चौधरी टोक्यो ओलंपिक खेला में क्वालिफिकेशन राउंड में 586 / 600 अंकों के साथ पहले स्थान पर रहे परंतु आठ प्रतिस्पर्धियों वाले फाइनल में सातवें स्थान पर रहे। इससे न केवल सीरम का ओलंपिक पदक जीतने का सपना बिखर गया अपितु करोड़ों भारतीयों की उम्मीदों पर भी पानी फिर गया। इस स्पर्ग में स्वर्ण पदक जीतने वाले जादद फोराजी (ईरान) रजत पदक जीतने वाले माइक दामिर (सर्बिया) और कास्य पदक जीतने वाले पेंग वेई (चीन) को सौरम ने 2019 में अपने पहले ही विश्व वर्ल्ड कप में मात देते हुए स्वर्ण पदक जीता था।

महिला हॉकी टीम चौथा स्थानः एशिया कप, 2017, गिफू में स्वर्ण पदक: एशियाई चैंपियनशिप ट्रॉफी, 2018, डोंगाइ में रजत पदक और एशियाई खेल 2018 जकार्ता में रजत पदक जीतने वाली भारतीय महिला हॉकी टीम ने क्वार्टर फाइनल में अकल्पनीय प्रदर्शन करते हुए तीन बार की चैंपियन व शक्तिशाली आस्ट्रेलियाई टीम को 1-0 से हराकर पहली बार सेमीफाइनल में पहुंचते हुए पदक पाने की आश जगाई थी किंतु पहले, सेमीफाइनल में विश्व चैंपियन अर्जेंटीना से 1-0 से और फिर तीसरे स्थान के लिए हुए बेहद ही रोमांचक मैच में ब्रिटेन से 4-3 से हारकर उनका ओलंपिक पदक जीतने का सपना टूट गया। फिर भी, ओलंपिक खेलों में महिला हॉकी टीम का यह सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।

दीपक पूनिया, कुस्ती (86 किलोग्राम भार वर्ग): टोक्यो ओलंपिक खेलों में तीसरे स्थान के लिए हुए मैच में दीपक पूनिया दुर्भाग्यवश अंतिम क्षणों में सैन मैरिनो के माइल्स अमीन से हारकर चदक से चूक गए। दीपक एक अंक की बढ़त का आखिर तक बचाव करने की कोशिश कर रहे थे किंतु अमीन ने बाजी पलटते हुए यह मैच 3-2 से अपने नाम कर दिया। भारतीय कोच ने निर्णय को चुनौती भी दी लेकिन अंततः निर्णय अमीन के पक्ष में गया। दीपक पूनिया द्वारा पूर्व में जीते गए पदक इस प्रकार है विश्व चैंपियनशिप 2019 नूर सुल्तान जूनियर कुश्ती चैंपियनशिप 2018, त्मावा (स्लोवाकिया) रजत पदक विश्व जूनियर कुश्ती चैंपियनशिप, 2019. रजत पदक विश्व तल्लिन (एस्टोनिया) स्वर्ण पदक, एशियाई चैंपियनशिप 2019 झियान कांस्य पदक एशियाई चैंपियनशिप, 2020. नई दिल्ली, कास्य पदक: एशियाई चैंपियनशिप 2021 अल्माटी, रजत पदक |

कमलप्रीत कौर, चक्का फेंक: कमलप्रीत कौर ने टोक्यो ओलंपिक खेलों में भारत के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए योग्यता दौर में 64.00 मीटर थ्रो के साथ दूसरे स्थान पर रहकर फाइनल में जगह बनाई परंतु फाइनल में वह अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन (एनआईएस पटियाला में आयोजित इंडियन ग्रां प्री-4 में 21 जून 2021 को दर्ज 66.59 मीटर का थ्रो) नहीं दोहरा सकी और 63.70 मीटर थ्रो के साथ छठे स्थान पर रहीं कमलप्रीत ने 2019 फेडरेशन कप सीनियर एथलेटिक्स चौम्पियनशिप में 60.25 मीटर के थ्रो के साथ स्वर्ण पदक जीता और फिर 24वें फेडरेशन कप सीनियर एथलेटिक्स चौपियनशिप में 65.06 मीटर के राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ थ्रो के साथ इतिहास रच डाला। इस प्रकार वह डिस्कस थ्रो में 65 मीटर के बैरियर को पार करने वाली पहली भारतीय महिला बनी और उन्होंने टोक्यो ओलंपिक के लिए क्वालीफाई किया

अदिति अषोक, गोल्फ टोक्यो ओलंपिक खेलों में अपना सर्वश्रेष्ठ एवं असाधारण प्रदर्शन करने वाली गोल्फर अदिति अशोक मामूली अंतर से पदक चूक गई। लगातार दूसरे नंबर पर चल रही अदिति खराब मौसम से प्रभावित चौथे दौर में तीन अंडर 68 का स्कोर करके चौथे स्थान रहीं। अदिति का कुल स्कोर 15 अंडर 269 रहा और वह दो स्ट्रोक्स से चूक गई। अदिति ने रियो डी जनेरियो में 2016 ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेलों में भी प्रतिभागिता की थी और तब अदिति सभी गोल्फरों में सबसे कम उम्र की प्रतिभागी थी। तब यह 41वें स्थान पर रही थी। विश्व में 200 रैंक वाली अदिति का कहना था मैं किसी और टूर्नामेंट में में चौथे स्थान पर होती तो शायद मुझे खुशी होती पर ओलंपिक में चौथे स्थान पर रहकर खुश होना मुश्किल है, **यह हार पचाना कठिन है।**

चौथे स्थान पर रहकर पदक चूकने वाले भारतीय

ओलंपिक में पदक चूकने का मलाल सबसे ज्यादा चौथे स्थान पर रहने वाले खिलाड़ी या टीम को होता है। आखिरी स्थान पर रहना सबसे ज्यादा निराशाजनक होता है लेकिन चौथे स्थान पर होना सबसे ज्यादा दर्द देता है।

1956 मेलबर्न ओलंपिक, फुटबॉल टीम

1960 रोम ओलंपिक, मिल्खा सिंह, एथलेटिक्स

1984 लॉस एंजिलिस ओलंपिक, पीटी ऊषा, एथलेटिक्स

2004 एथेंस ओलंपिक लिएंडर पेस महेश भूपति टेनिस

2004 एथेंस ओलंपिक, कुंजरानी देवी, भारोत्तोलन

2012 लंदन ओलंपिक, जॉवदीप कर्माकर, निशानेबाजी

2016 रियो ओलंपिक, दीपा कर्माकर, जिमनास्ट

2016 रियो ओलंपिक, अभिनव बिंदा, निशानेबाजी

2016 रियो ओलपिक, रोहन बोपन्ना एवं सानिया मिर्जा (मिश्रित युगल टेनिस),

2020 टोक्यो ओलंपिक, अदिति अशोक, गोल्फ

2020 टोक्यो ओलंपिक, दीपक पुनिया, कुस्ती

2020 टोक्यो ओलंपिक, महिला हॉकी टीम

यहां यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि भारतीय हॉकी टीम का प्रदर्शन सुधारने में ओडिशा सरकार और माननीय मुख्य मंत्री श्री नवीन पटनायक जी का विशेष योगदान है। ओडिशा सरकार 2018 से भारतीय हॉकी टीमों की आधिकारिक प्रायोजक रही है। भारतीय हॉकी टीमों के सम्मान समारोह में माननीय मुख्यमंत्री ने कहा, टीमों ने टोक्यो ओलंपिक में अपने शानदार प्रदर्शन के साथ इतिहास रचा है।' 'आपने टोक्यो में अपनी उत्साही लड़ाई से हम सभी को गौरवान्वित किया है। भारतीय हॉकी के पुनरुद्धार का गवाह बनने के लिए ये भारत के लिए बेहद भावनात्मक क्षण है। हम, ओडिशा में इस बात से उत्साहित है कि हॉकी इंडिया के साथ हमारी साझेदारी ने देश के लिए यह बड़ी उपलब्धि हासिल की है। मेरा मानना है कि ओडिशा और हॉकी का पर्यायवाची बनना तय है। हम हॉकी इंडिया के साथ अपनी साझेदारी जारी रखेंगे। ओडिशा 10 और वर्षों तक भारतीय हॉकी टीमों का समर्थन करना जारी रखेगा।

संसद के मानसून सत्र के दौरान 09 अगस्त 2021 को युवा कार्यक्रम और खेल मंत्री श्री अनुराग ठाकुर ने बताया कि ओलंपिक और पैरालंपिक खेलों में भारत के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए खेल मंत्रालय ने सितम्बर 2014 में ओलंपिक पदक लक्ष्य योजना (टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम टीओपीएस) शुरू की थी। अप्रैल 2018 में इस स्कीम में थोड़ा बदलाव भी किया गया। इस स्कीम के तहत कोर ग्रुप में चुने गए एथलीटों को हर महीने 50 हजार रुपए और डेवलपमेंट ग्रुप के एथलीटों को 25 हजार रुपए का भत्ता दिया जाता है। इस स्कीम के तहत एथलीटों को टॉप कोच से कोचिंग, खेल से जुड़े इक्विपमेंट खरीदने में मदद की जाती है। इसके अलावा खिलाड़ियों को सपोर्ट स्टाफ जैसे फिजियोथेरेपिस्ट और फिजिकल ट्रेनर्स भी दिए जाते हैं। फिलहाल कोर ग्रुप में 162 एथलीट हॉकी टीम (महिला एवं पुरुष दोनों) और डेवलपमेंट ग्रुप में 254 एथलीटों को शामिल किया गया है। खेल मंत्री ने आगे बताया कि जिन खेलों में भारत में ओलंपिक खेलों, एशियाई खेलों एवं राष्ट्रमंडल खेलों में मदक जीते हैं और जिनमें पेरिस (2024) और लॉस एंजिल्स (2028) में होने वाले ओलंपिक खेलों में पदक जीतने की संभावना है, उन खेलों की एक हाई प्रायोरिटी कैटेगरी बनाई गई है ताकि उन पर ज्यादा फोकस किया जा सके इस कैटेगरी में नौ खेलों को शामिल किया गया है जिनमें एथलेटिक्स, बैडमिंटन, हॉकी, निशानेबाजी, टेनिस, भारोत्तोलन, कुश्ती, तीरंदाजी और मुक्केबाजी शामिल हैं।

निस्संदेह, भारत सरकार खेलों में भारतीय खिलाड़ियों के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए गंभीरतापूर्वक प्रयास कर रही है और राज्य सरकारों भी द्वारा पदक विजेताओं को विभिन्न प्रकार के पुरस्कारों से नवाजा जाता है परंतु जैसा कि ऊपर बताया गया है कि भारतीय खिलाड़ियों के पूर्व प्रदर्शन को देखते हुए ओलंपिक एनालिस्ट कंपनी ग्रेसनोट (Gracenote) ने टोक्यो ओलंपिक में भारत के चार स्वर्ण पदकों सहित कुल 17 पदक जीतने का अनुमान लगाया गया था, तथा भारतीय खेल प्रेमी भी 15-20 पदक जीतने का आशा कर रहे थे। किंतु भारत एक स्वर्ण सहित मात्र सात पदक जीतने में कामयाब रहा। मुझे लगता है कि इसका सबसे कारण मनोवैज्ञानिक बाधा है, भारतीय खिलाड़ी करोड़ों भारतीयों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने के प्रयास में अंतिम क्षणों में मानसिक दबाव में आ जाते हैं और पोडियम तक पहुंचने में असफल रहते हैं। अतः, यदि ओडिशा सरकार की तरह अन्य राज्य सरकारें भी आगे आकर एक-एक खेल को प्रायोजित करने का प्रयास करें और भारत सरकार ओलंपिक पदक लक्ष्य योजना के तहत खिलाड़ियों को दी जाने वाली विभिन्न सुविधाओं के साथ-साथ उनके लिए श्रेष्ठ से श्रेष्ठ मनोवैज्ञानिकों की व्यवस्था करे तो निश्चित तौर पर खिलाड़ी ओलंपिक खेलों में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए देश का नाम रोशन कर सकते हैं।

बीरेन्द्र सिंह रावत
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नोएडा

जलवायु परिवर्तन का श्रमिकों पर प्रभाव

समय के साथ-साथ मनुष्य की लालच एवं लालसा भी बढ़ती जा रही है। व्यापार-व्यवसाय की आड़ में उद्योगीकरण और शहरीकरण दिनोंदिन बढ़ रहा है। निजी स्वार्थ के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जा रहा है। नए आर्थिक प्रोसेसिंग जोन के नाम पर कृषि योग्य भूमि का अधिग्रहण किया जा रहा है। जीवन-यापन की प्राकृतिक शैली को छोड़कर हम उपभोक्तावादी संस्कृति, वातानुकुलित घर, निजी कार, फ्रिज, वाशिंग मशीन, हवाई यात्रा, बिजली का अनवरत एवं अंधाधुंध प्रयोग जैसी कृत्रिम शैली अपनाने लगे हैं और इनसे निकलने वाली ग्रीन हाउस गैसों के भारी उत्सर्जन के फलस्वरूप वायु, जल, मृदा, ध्वनि का प्रदूषण बढ़ रहा है। इसके अतिरिक्त जलवायु परिवर्तन के लिए ज्वालामुखी, समुद्री तरंगे, महाद्वीपों का खिसकना एवं धरती का घुमाव आदि प्राकृतिक कारण भी जिम्मेदार है जिस पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है और हम लोग महाप्रलय की ओर बढ़ रहे हैं। वास्तव में उपर्युक्त मानवीय एवं प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी का पारिस्थिकीय संतुलन बिगड़ने से भूकंप, सुनामी, बाढ़, सूखा, चक्रवात आदि ने हमारे अस्तित्व को ही संकट में डाल दिया है। सभी भौगोलिक क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिख रहा है वायुमंडल और महासागर गर्म हो हो रहे हैं, बर्फ और बर्फ की सीमा एवं मात्रा कम हो रही है. तथा समुद्र का स्तर बढ़ रहा है और मौसम के पैटर्न बदल रहे है।

जलवायु परिवर्तन से कमोबेश सभी लोग प्रभावित हो रहे हैं किंतु सबसे ज्यादा श्रमिक प्रभावित हो रहे हैं खासकर खेती. पर्यटन तथा मत्स्य पालन में लगे श्रमिक जलवायु परिवर्तन श्रमिकों के कार्यजीवन, आमदनी और जीवनशैली को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है। उन्हें न केवल नई और स्वच्छ उत्पादन तकनीक को अपनाना पड़ सकता है बल्कि कुछ मामलों में अस्थायी, अलाभप्रद उत्पादन या ब क्षेत्र में आने से उनका कार्यस्थल गायब / बंद हो सकता है और श्रमिकों को मजबूरन विस्थापन या उत्प्रवास भी करना पड़ सकता है।बाढ़ या सूखे की स्थिति में कृषि एवं कृषि से जुड़े जन्य व्यवसाय- कटाई, बुआई. भंडारण, फूड प्रोसेसिंग में लगे श्रमिकों के रोजगार पर संकट छा जाएगा। जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान, वर्षा में बदलाव आने से मिट्टी की क्षमता कीटाणु, बीमारी, कटाव आदि की वजह से खेती का नुकसान बढ़ेगा एवं खाद्यान्न का उत्पादन कम होगा। देश की लगभग 60 प्रतिशत आबादी का कृषि पर निर्भरता के कारण इतनी विशालकाय जनसंख्या के समक्ष आजीविका के लिए एक बड़ी विपत्ति खड़ी हो सकती है। पर्यटन सैक्टर जलवायु परिवर्तन से बहुत ही संवेदनशील है। शिमला, दार्जिलिंग जैसे हिल स्टेशनों का वातावरण गर्म हो जाने पर पर्यटन क्षेत्र में लगे कर्मकार खासकर यात्रा गाईड, होटल कर्मकार एवं यातायात कर्मकार बेरोजगार हो जाएंगे। ऊंची चोटी पर बर्फ पिघलने / कम होने से स्कीईंग तथा आल्प्स जैसे खेल नहीं होंगे / कम होगे तथा इनसे जुड़े श्रमिक बुरी तरह प्रभावित होंगे। जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्र के जल स्तर में वृद्धि हो रही है। इसके फलस्वरूप तटीय जीवन, मत्स्य पालन, मानव बसाव एवं इससे जुड़े श्रमिकों का जीवन अस्त-व्यस्त हो जाएगा। मालदीव, मुंबई जैसे तटीय क्षेत्रों के श्रमिकों को विस्थापन या उत्प्रवास की समस्या (जो कि कष्टदायक होता है) से जूझना पड़ेगा।

जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाली आंतरिक और बाह्य गर्मी से सांस एवं पानी संबंधी बीमारियों जैसे डायरिया, कॉलरा एवं दमा आदि का विस्तार होगा एवं इससे श्रमिकों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा एवं उनकी उत्पादकता घटेगी। समान आउटपुट प्राप्त करने के लिए श्रमिकों को ज्यादा समय तक काम करना पड़ेगा। इससे समय एवं धन की बर्बादी होगी। गर्मी के खतरे से रोजगारजन्य स्वास्थ्य की रक्षा के लिए बड़े पैमाने पर आर्थिक मूल्य चुकाना पड़ेगा। साथ ही नई पीढ़ी को भावी कार्यबल में शामिल करने में असुविधा होगी क्योंकि बचपन से ही उनके स्वास्थ्य का लाईलाज नुकसान हो चुका होगा विस्थापन एवं मृत्युदर में वृद्धि होने से यह समस्या और अधिक विकराल रूप धारण करेंगी और कर्मकार, खासकर कुशल एवं तकनीकी कर्मकार की कमी हो सकती है।

जंगल एवं वन्य जीवन जलवायु परिवर्तन के प्रति बेहद संवेदनशील होते हैं। अत्यधिक ठंड या गर्मी से कई जानवर तथा पेड़-पौधे विलुप्त हो सकते हैं एवं वन्य जीवन पर आश्रित श्रमिकों का भविष्य बुरी तरह प्रभावित हो सकता है। किंतु जलवायु परिवर्तन नामक विध्वंस में भी एक सकारात्मक सभावना छिपी हुई है। कुछ दशक पहले यह कल्पना भी नहीं की जाती थी कि मौसम और जलवायु में होने वाला परिवर्तन भी रोजगार का जरिया बन सकता है लेकिन आज यह सच्चाई है कार्बन डाइऑक्साइड को उत्सर्जित करने की दर को कम से कम करने में महारत हासिल करने, पर्यावरण के अनुकूल तकनीक विकसित करने एवं आम लोगों की जीवन शैली को बेहतर बनाने, उसे प्रदूषित होने से रोकने आदि सहायक गतिविधियों में बड़े पैमाने पर नौकरियां पैदा हुई हैं। आज ब्लू कॉलर, व्हाइट कॉलर जॉब की तरह ग्रीन कॉलर जॉब भी रोजगार की दुनिया में नयी शब्दावली बनकर उभरी है। इसमें बहुत पढ़े-लिखे, कम पढ़े-लिखे और बिल्कुल कम पढ़े-लिखे लोगों, सभी के लिए रोजगार की संभावनाएं है जैसे वनीकरण, कम पानी वाली खेती-किसानी करना, पर्यावरण को संरक्षित रखने में मदद करना. इंजीनियरिंग तथा ट्रांसपोर्टेशन के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर नौकरियां पैदा हुई है और इससे श्रमिकों की बेरोजगारी दूर हो रही है।

चूंकि जलवायु परिवर्तन किसी एक देश अथवा क्षेत्र की समस्या नहीं है इसलिए सभी स्तरों पर ठोस उपायों की जरूरत है। भारत में गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों जैसे सूर्य जल एवं पवन ऊर्जा के क्षेत्र में काफी संभावनाएं हैं. इसे प्रोत्साहित कर वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड को सोखकर जलवायु परिवर्तन को कम किया जा सकता है। अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ तथा प्रदूषण (वायु, जल, ध्वनि, मृदा प्रदूषण) से मुक्त कर बिजली, पानी, ईंधन की बचत, उन्नत कार्बन प्रौद्योगिकी का विकास एवं प्रसार कर और उपभोक्तावादी जीवनशैली में बदलाव लाकर भी जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव को कम किया जा सकता है अन्यथा इसकी

कीमत वही लोग ज्यादा चुकाएंगे जो इसके कारण नहीं है.. राजनीतिक एवं आर्थिक दृष्टि से कमजोर हैं, नीति बनाने में जिनकी कोई भूमिका नहीं है अर्थात् गरीब एवं श्रमिक श्रम उत्पादकता एवं व्यवसायजन्य स्वास्थ्य को बचाने के लिए किसानों, स्वनियोजितों, कर्मकारों, ट्रेड यूनियनों, सरकार तथा नियोजकों सभी को सुरक्षात्मक उपाय अपनाने में भागीदार बनना चाहिए तभी श्रम जगत इस प्रलय का मुकाबला कर सकता है।

समय की मांग के अनुरूप पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन के मोर्चे पर भारत ने घरेलू स्तर पर ऐसी मिसाल कायम की है जिसका आज विश्व अनुकरण कर रहा है। भारत आर्थिक विकास के क्रम में ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में उत्तरोत्तर कमी लाने में सफल रहा है। भारत अपने 2005 में निर्धारित स्तर की तुलना में वर्ष 2020 में जीडीपी की मिशन इंडेसिटी को 20 से 25 प्रतिशत तक करने की अपनी 2020 से पूर्व की प्रतिबद्धता को पार कर रहा है। पेरिस जलवायु समझौते में निर्धारित सब-2 डिग्री सेल्सियस स्तर के लक्ष्य की अपनी प्रतिबद्धता से भी बेहतर प्रदर्शन करना दर्शाता है कि भारत जो कहता है, सो करता भी है। ग्लासगो में चल रहे संयुक्त राष्ट्र के 26वें जलवायु सम्मेलन में विश्व के नेताओं ने इस बात को स्वीकारते हुए भारत की सराहना की है कि जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने के मामले में भारत ने एक उदाहरण पेश करते हुए विश्व का नेतृत्व किया है।

ऊर्जा और पर्यावरण के क्षेत्र में भारत की भूमिका विश्व पटल पर महत्त्वपूर्ण है। ऊर्जा क्षेत्र के नए विकल्पों की दिशा में भी भारत आगे बढ़ रहा है। पिछले सात वर्षों में भारत की स्थापित अक्षय ऊर्जा क्षमता में ढाई गुणा की वृद्धि हुई है. जिसके अंतर्गत सौर ऊर्जा क्षमता में 13 गुणा की वृद्धि दर्ज की गई है। केंद्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन अनुकूलन कोष के माध्यम से राज्यों और संघ शासित प्रदेशों के पर्यावरण अनुकूलन कार्यों को सहयोग तथा समर्थन दिया जा रहा है। आपदा प्रबंधन अवसंरचना पर अंतर्राष्ट्रीय गठबंधन (सीडीआरआई) भी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पहल का ही परिणाम है। सीडीआरआई का उद्देश्य सतत विकास के समर्थन में जलवायु और आपदा संबंधी जोखिमों के लिए नई एवं मौजूदा बुनियादी ढांचा प्रणालियों के लचीलेपन को बढ़ावा देना है। 23 सितंबर 2018 को यूएन क्लाइमेट एक्शन समिट' में अपने भाषण के दौरान प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा सीडीआरआई की शुरुआत की गई थी जिसमें अब सदस्य के रूप में 25 देश और सात अन्तरराष्ट्रीय संगठन शामिल हैं। भारत इलेक्ट्रिक वीइकल इनिशिएटिव (ईवीआई) का भी सदस्य है। यह विश्व की अनेक सरकारों का एक नीतिगत मंच है, जो कि दुनिया में इलेक्ट्रिक वाहनों की शुरुआत करने और उनके उपयोग में तेजी लाने के लिए काम करता है। इन बहुपक्षीय और द्विपक्षीय समझौतों का लाभ यह हुआ है कि विभिन्न क्षेत्रों में संयुक्त रूप से अपेक्षाकृत सस्ती लागत से टिकाऊ प्रौद्योगिकियों का विकास किया जा रहा है।

इन सब उपलब्धियों के साथ आज भारत जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने के लिए पेरिस समझौते के तहत निर्धारित अपने लक्ष्यों (राष्ट्रीय योगदान) को न केवल प्राप्त करने बल्कि उससे भी आगे बढ़ने की राह पर है। आज भारत जी-20 समूह का एकमात्र ऐसा देश है जो अपनी जलवायु प्रतिबद्धताओं को पूरा करने की दिशा में सधे कदमों से आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत, विकासशील देशों की आवाज बनते हुए विश्व पटल पर इस बात को उठाने में कामयाब रहा है कि विकसित देश प्रदूषण के लिए ऐतिहासिक रूप से जिम्मेदार रहे हैं, अतः उन्हें जलवायु अनुकूलन के लिए वित्तीय और तकनीकी सहयोग उपलब्ध कराना चाहिए। जो भी जलवायु प्रदूषित हो रही है या ग्लोबल वार्मिंग हो रही है, उसके लिए दो कारण जिम्मेदार हैं। एक प्राकृतिक और दूसरा मानव जनित । प्राकृतिक कारणों पर हमारा कोई वश नहीं है, पर मानव जनित कारणों को हम नियंत्रित कर सकते हैं। पृथ्वी का तापमान दिनोंदिन बढ़ रहा है और मानव जाति के कदम विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। ऐसे में अगर हमने पर्यावरण को बचाने के लिए कोई बड़ा कदम नहीं उठाया तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। पर्यावरण संरक्षण से हमें क्या लेना-देना, पर्यावरण प्रदूषण के लिए हम ही जिम्मेदार नहीं हैं और भी लोग हैं, ऐसी सोच रखने वाले भी इसके लिए जिम्मेदार हैं। दिनोंदिन बढ़ता प्रदूषण और घटता वृक्षारोपण विभिन्न प्रकार की बीमारियों को निमंत्रण दे रहा है। बढ़ता शहरीकरण और घटती संवेदनाएं भी कारण हैं घटते पेड़ और बढ़ते प्रदूषण का प्रदूषण के कारण शहरों में निर्माण कार्य को बंद करने के निर्देश समय-समय पर जारी कर दिये जाते हैं, अब तो ज्यादा प्रदूषित शहरों में लॉकडाउन लगाने तक की नौबत आ गई है जिससे श्रमिकों की आमदनी प्रभावित हो सकती है।

बेशक हमारी जीवनशैली पर्यावरण के प्रति अतिसंवेदनशील हो गई है। तेजी से कटते पेड़ों और फैक्ट्रियों से निकलने वाला अंधाधुंध गैसीय उत्सर्जन आदि के परिणाम समूची मानव जाति झेल रही है। इसके परिणामस्वरूप ओजोन परत में छेद हो चुका है जिससे पराबैंगनी किरणें सीधे धरती पर पहुंच रही हैं। यही वजह है कि दिनोंदिन तापमान बढ़ता जा रहा है। इनसे बचने के लिए हर व्यक्ति को प्रयास करने होंगे। हर काम सरकार पर डालकर खुद को बचा नहीं सकते। पेड़ ही वातावरण को शुद्ध रखकर ग्लोबल वार्मिंग से निजात दिला सकते हैं। गर्मी को कम करने वाले कारक जैसे बड़े पेड़, पोखर, तालाब, नदी, कच्ची जमीन आदि को बढ़ावा देना होगा। अपने फायदे के लिए लोग पॉलीथीन व प्लास्टिक का उत्पादन करते हैं। यही प्लास्टिक और पॉलीथीन समुद्र और मिट्टी में जाकर पर्यावरण का विनाश कर रहा है। हमें अपने जीवन से पॉलीथीन और प्लास्टिक को दूर करना होगा। यदि अब भी पर्यावरण के प्रति लोगों की भागीदारी न बढ़ी तो आने वाले समय में इसके भयंकर परिणाम सामने आयेंगे। घर-घर जाकर लोगों को पर्यावरण बचाने के प्रति जागरूक करना होगा। पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ने से प्रकृति की रक्षा करने में मदद मिलेगी।

राजेश कुमार कर्ण
आशुलिपिक सहायक,
वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नोएडा

जिंदगी खूबसूरत है

हाल ही की बात है कि एक महिला ऑटो से कार्यालय के लिए निकली थी। प्राय: यह बहुत कम देखने को मिलता है कि ऑटो वाले सावधानीपूर्वक ऑटो चलाते हैं, अक्सर वो घोड़े पर सवार होते हैं। किन्तु ये ऑटो वाला सामान्य गति से और सावधानीपूर्वक ऑटो चला रहा था। अचानक एक कार रोड के पार्किंग से तेजी से निकलकर रोड पर ऑटो के सामने आ गयी। ऑटो की स्पीड सामान्य होने के कारण ऑटो चालक ने तेजी से ब्रेक लगाया और दुर्घटना होते-होते रह गई किन्तु ऑटो उस कार से जाकर सट गया, हालांकि किसी को कोई नुकसान नहीं हुआ। कुछ क्षण के लिए ट्रैफिक जाम लग गया।

कार चालक अच्छे वेश-भूषा में शिक्षित लग रहा था किन्तु गुस्से से कार से बाहर निकालकर डिक्की से एक मोटा डंडा निकाला और ऑटो चालक को अभद्र बातें कहने लगा जबकि गलती उस कार चालक की थी। ऑटो चालक ने हाथ जोड़े कर, कार चालक से बहुत ही सज्जनता और सकारात्मक होकर माफ़ी मांगी और उस महिला ने मार-पीट के डर से तुरंत उस कार चालक के सामने आकर नुकसान न होने का हवाला देते हुये मामले को रफा-दफा किया। कार चालक महिला को देखकर थोड़ा शांत हुआ, किन्तु बड़बड़ाते हुए वो अपने रास्ते निकल गए और ये अपने रास्ते ।

बेशक वक्त बड़े रफ्तार से भाग रहा है और हम सब कठपुतली बने उस वक्त को पकड़कर भागना चाहते हैं, किन्तु ऐसा हो नहीं पाता। सुबह का समय था सबको कार्यालय जाने की जल्दी होती है किन्तु ऐसी भी क्या जल्दी जिसमे हमें अपनी परवाह भी न हो और हम अपनी नैतिकता भी भूल जाएं।

ऑटो में बैठी उस महिला को कार चालक पर बहुत गुस्सा आ रहा था और उस ऑटो चालक को लेकर कई सवाल उठ रहे थे। महिला ने उस ऑटो चालक से पूछा.... आप ने उस कार चालक से माफी क्यूँ मांगी, वो तो आपको मरने-मारने पर उतारू था, जबकि गलती उसकी थी। हमारी किस्मत अच्छी थी नहीं तो अभी हम अस्पताल में होते।

ऑटो वाले ने एक लंबी साँस लेते हुए कहा कि मैडम, बहुत से लोग गार्बेज ट्रक (कूर्डे के ट्रक) की तरह होते हैं वे बहुत सारा कूड़ा अपने दिमाग में लेकर चलते हैं। जिन चीजों की जीवन में कोई जरूरत नहीं होती उनको ये लोग जोड़ते चलते हैं जैसे- क्रोध, चिंता, निराशा, अभिमान आदि जब उनके दिमाग में ये कूड़ा अधिक हो जाता है तो इसका बोझ हल्का करने के लिए इसे दूसरों पर फेंकने का मौका ढूँढते हैं, इसलिए मैं ऐसे लोगों से दूरी बनाए रखता हूँ और दूर से ही मुस्कराकर अलविदा कह देता हूँ। अगर उन जैसे लोगों का गिराया / फेंका हुआ कूड़ा मैंने स्वीकार कर लिया या मैंने उनकी तरह ही व्यवहार किया तो मैं भी एक दिन कूड़े का ढेर बन जाऊँगा और मैं भी ऐसा ही व्यवहार करने लगूंगा जिससे दूसरो का कम और अपना नुकसान ज्यादा होता है।

हमें ये याद रखना चाहिए कि सभी मानसिक रोगी केवल अस्पताल में ही नहीं रहते कुछ लोग हमारे आस-पास खुले में भी घूमते रहते हैं। प्रकृति का नियम है कि खेत में बीज न डाले जाएं तो कुदरत उसमे घास-फूस से भर देती है, उसी तरह दिमाग में सकारात्मक विचार न भरे जाए तो नकारात्मक विचार अपनी जगह बना लेती है।

मैडम, जिंदगी एक बार मिली है इसे मैं जिंदादिली से और खूबसूरती से जीता हूँ। "**कहने को तो वो ऑटो चालक किन्तु जीवन का पाठ पढ़ा गया।**"

[सच्ची घटना पर आधारित]

रोजलीन हेमरोम
सहायक निदेशक (रा.भा.),
कर्मचारी राज्य बीमा निगम (उप क्षेत्रीय कार्यालय), नोएडा

सदगुरु का मानव जीवन में महत्त्व

हमारा प्यारा देश भारत वर्ष पैगम्बरों, ऋषि, मुनियों की भूमि है, जहाँ पर लाखों ऋषि मुनि पीर पैग़म्बर समय-समय पर जन्म लेते रहे है। गुरु का जीवन में बहुत ही महत्व है। जिस प्रकार से किसी भटके हुए रास्ते के मुसाफिर को अपनी गंतव्य (स्थान की प्राप्ति के लिए किसी पथ प्रदर्शक की जरूरत होती है या किसी मरीज को इलाज के लिए अच्छे वैद्य या हकीम की जरूरत होती है, उसी प्रकार से मनुष्य को लोक और परलोक में अच्छे स्थान और सफलता की प्राप्ति के लिए एक सदगुरु की आवश्यकता होती है। कई धार्मिक पुस्तकों में गुरु की महिमा का वर्णन किया गया है, जिनका उल्लेख इस प्रकार है -

तुलसीदास जी श्री राम चरित मानस में गुरु और संत की महिमा इस प्रकार से वर्णन करते हैं -

परमन, परधनहरणाहित वेश्या परम परवीन
तुलसी सोई चतुर है संत धरण लवलीन
हे घर संत न आवहि श्रद्धा सेवानाहि
ता घर मनहु मशान है भूत बसे तेहि माहि
अंत समय आयो निकट देख खोल के नैन
नारायण सुख भोग में तू लपत दिन रैना ।।

अर्थात् जो दुष्ट प्रकृति के व्यक्ति हैं उनको संतो और गुरुओं की संगति पसंद नही होती है, उनका मन सदैव दूसरों के दिलो दिमाग का हरण करने में दूसरों के धन और सम्मान को हरण करने में या निम्न और घटिया लोगों की संगति में समय व्यतीत करना पसंद होता है। इसके विपरीत जो उदारचरित लोग है उनको अपने गुरुओं और अच्छे लोगो की संगति में समय व्यतीत करना अच्छा लगता है। वह जानते है कि यह मानव जीवन बहुत भाग्य से मिला है, इसलिए इसको ऐसे व्यर्थ में नहीं बिताना चाहिए। जो समय मिले उसका भरपूर प्रयोग करना चाहिए और भगवत शक्ति में समय को बिताना चाहिए। वह मनुष्य धन्य हैं जिनको साधु संतो की चरणों में और ईश्वर की भक्ति में जिन्दगी गुजारना अच्छा लगता है। जिससे मुनष्य अपनी लोक परलोक यानी दुनिया और आखिरत में सफल हो जाये। **कबीरदास जी कहते हैं कि :-**

कबिरा हरि के रूठते गुरु के शरण में जाए।
कहे कबीर गुरु रूठते हरि, नहीं होत सहाय ।।

यह बात कुरान शरीफ में भी लिखी है कि ऐ मनुष्यों अगर तुम मुझसे नजदीकी चाहते हो अर्थात् मेरे प्रिय बनना चाहते हो तो तुझको मेरे पैगम्बर से मुहब्बत करनी होगी।

गुरु वाणी में गुरु की महानता इस प्रकार लिखी है-

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

पैगम्बर मोहम्मद साहब फरमाते है कि :-

पीर मुर्शिद और गुरु हमारे प्रतिनिधि है
इनकी इज्जत करना हर इंसान का कर्तव्य है।।

श्री कृष्ण ने गीता में उपदेश देते है कि :-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।

अर्थात् जब जब धर्म का पतन होने लगता है तब तब कोई न कोई महापुरूष धरती पर जन्म लेता है, ईश्वर के दूत के रूप में और वह धर्म की रक्षा और भटकी हुई मानवता का सही मार्ग दर्शन करता है।।

डॉ. मोहम्मद इमरान
प्रयोगशाला तकनीशियन,
राष्ट्रीय जैविक संस्थान, नोएडा

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की दुनिया में राजभाषा हिंदी

"निज भाषा उन्नति अहँ, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा- ज्ञान के, मिटत न हिय को सुल
भारतेंदु हरिश्चंद्र

प्रस्तावना:

भारत इस वर्ष स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहा है। इस कार्यक्रम में ज्यादा से ज्यादा लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने व जागरूकता के लिए भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों ने नवोन्मेषी कार्यक्रमों की श्रृंखला तैयार की है ताकि इस महोत्सव को जनभागीदारी' और 'जन आंदोलन' की भावना के साथ मनाया जा सके। इसी क्रम में विज्ञान और तकनीक को हिन्दी भाषा के साथ जोड़ते हुए यह आलेख लिखा है।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ सदियों तक विदेशी शासकों ने राज किया। उन्होंने अपनी भाषाओं के उपयोग से इस देश के सरकारी कामकाज चलाया। ब्रिटिश शासक उनमें से ही एक थे, जिन्होंने अपनी अंग्रेजी भाषा के माध्यम से भारत पर राज किया। अंग्रेजों से भारत को आजादी तो मिल गई लेकिन अंग्रेजी भाषा से नहीं। ब्रिटिश शासन काल में अंग्रेजी भाषा ही एक ऐसा माध्यम था जिसके जरिए मनुष्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में शिक्षा ग्रहण कर सकता था। लोगों के दिमाग में यही बैठ गया कि अंग्रेजी नहीं सीखेंगे तो हम अपना विकास नहीं कर सकते, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष के क्षेत्र में अनुसंधान नहीं कर सकते। विदेशियों का शासन होने के कारण यहाँ की संस्कृत, हिंदी, मध्य भारतीय एवं दक्षिण भारतीय भाषाएँ पिछड़ती रहीं। उनका विकास नहीं हो पाया। अंग्रेजी भाषा शिक्षा का माध्यम बनी और यहाँ की स्थानीय भाषाएँ केवल मातृभाषाएँ बनकर दहलीज के अंदर तक सिमटी रहीं।

राजभाषा हिंदी:

स्वतंत्रता के बाद भी भारत देश भाषा के आधार पर कई राज्यों में बिखर गया। उस राज्य की भाषा को कामकाज की भाषा बनाया गया। जैसे महाराष्ट्र में मराठी भाषा, आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना में- तेलुगु, कर्नाटक में- कन्नड, केरल में मलयालम, तमिलनाडु में तमिल, पश्चिम बंगाल में बांग्ला. गुजरात में गुजराती आदि राज्य का राजकाज तो चला लेकिन देश का क्या? इसी समस्या को दूर करने के लिए हिंदी भाषा को केंद्र सरकार की राजकाज की भाषा का स्थान दिया। इसी बात को लेकर कई सारे राज्यों में भाषाई विवाद चला। 14 सितम्बर सन 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके बाद संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के सम्बन्ध में व्यवस्था की गयी। इसी स्मृति को ताजा रखने के लिए प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता। है। साथ ही यह प्रावधान किया गया कि राजभाषा हिंदी के साथ-साथ केंद्रीय स्तर पर भारत में दूसरी सह राजभाषा के रूप में अंग्रेजी का प्रयोग किया जाए। राजभाषा हिंदी के लिए धारा 343 (1) के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी है। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त अर्को का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप (अर्थात 1, 2, 3 आदि) है।

राजभाषा हिंदी के विकास के लिए राजभाषा विभाग, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, केंद्रीय हिंदी शिक्षण योजना, केंद्रीय हिंदी संस्थान, केंद्रीय अनुवाद परिषद जैसी कई सरकारी संस्थाओं का उद्गम एवं विकास हुआ, जो केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालय, अधीनस्थ कार्यालय, स्वायत संगठनों, उपक्रमों, निकाय आदि में कार्यरत कर्मचारियों को हिंदी की शिक्षा प्रदान करने एवं राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्यरत है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी:

वर्तमान युग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बौद्धिकता) का युग है। यह कंप्यूटर साइंस का सबसे उन्नत रूप है। देखा जाए तो मानव पूर्णतः आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) पर निर्भर हो चुका है। सुबह जागने से लेकर सोने तक यह इन्ही आर्टिफिशियल मशीनों के साथ रहने लगा है, उनके साथ जीने एवं सोने लगा है। आज विज्ञान, तकनीकी, स्पेस अनुसंधान, कृषि अनुसंधान, भाषा अनुसंधान, दूरसंचार के क्षेत्र में जो कुछ विकास दिख रहा है वह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की देन है। इन अनुसंधान संस्थानों में आंकड़ों की प्राप्ति सूचना (इंफार्मेशन) संग्रह एवं सुरक्षा, मौसम परिवर्तन एवं पूर्वानुमान, सूचना का आदान-प्रदान, आदि कार्यों तथा इन कार्यों के निष्पादन के लिये आवश्यक कंप्यूटर हार्डवेयर एवं साफ्टवेयर अनुप्रयोगों से सम्बन्धित है। यह तकनीक कंप्यूटर पर आधारित सूचना प्रणाली का आधार है। यह प्रौद्योगिकी वर्तमान समय में विज्ञान, वाणिज्य और व्यापार का अभिन्न अंग बन गई है। प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान के बगैर यह सब नामुमकिन है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में डिजिटल हिन्दी:

हिंदी केवल साहित्य या बोलचाल की भाषा न रहकर उसने अपना डिजिटल रूप धारण कर लिया हैं। हिन्दी संगणक सम्बन्धी सॉफ्टवेयर औजारों की बात करें तो हिन्दी टंकण, मशीनी लिप्यन्तरण, मशीनी अनुवाद, शब्दकोष, वर्तनी जाँच, पाठ से वाक् तथा फॉण्ट परिवर्तक आदि तन्त्र लगभग पूरी तरह सुलभ हो चुके हैं। श्रुतलेखन एक ऐसी विधि है जिसमें एक व्यक्ति बोलता है तथा दूसरा उसे सुन कर लिखता है (वाक् से पाठ)। इस क्षेत्र में भी माइक्रोसॉफ्ट और गूगल जैसी कई बड़ी कंपनियों ने अपना हुनर दिखा दिया है। आज व्यक्ति एक जगह से दुनिया के किसी भी कोने में बैठे दूसरे व्यक्ति के मोबाइल,कम्प्यूटर या टैब पर देश या विदेश की किसी भी भाषा में डिक्टेशन दे सकता है। यह भी पूर्णत: टाइप फॉर्मेट में माइक्रोसॉफ्ट जैसी विकसित कंपनियां हिन्दी सामग्री के डिजिटलीकरण हेतु प्रभावी तरीके से कार्य कर रही है। प्रौद्योगिकी ने अब मनुष्य की आंखों से कम्प्यूटर को कंट्रोल करने की तकनीक ढूंढ निकाली है। इससे पता लग सकता है की तकनीक मनुष्य की कल्पना की उड़ान है। माइक्रोसॉफ्ट ने एक नई तकनीक निकाली है, जिसमें Tobil Eye Tracking डिवाइस का उपयोग करके मनुष्य अपनी आंखों से कम्प्यूटर के माउस, की-बोर्ड के साथ-साथ स्क्रीन पर दिखने वाले एप्लीकेशन पर जाकर फाइल को खोलना, टाइप करना, स्क्रोल को उपर-नीचे करना आदि विधियों पर कार्य कर सकता है। आप किसी कहानी या हॉलीवुड की फिल्म स्टोरी में नहीं है, आपको विश्वास रखना ही होगा। क्योंकि आप प्रौद्योगिकी के युग में है सबसे खास बात यह है कि इन सब चीजों को आप हिंदी तथा भारत की अन्य भाषाओं के माध्यम से उपयोग में ला सकते है।

इलेक्ट्रोनिक उपकरण और हिंदी:

आज विभिन्न प्रोग्रामिंग भाषाएं और डेटाबेस भी हिन्दी समर्थित है। अधिकतर ऑपरेटिंग सिस्टम का हिन्दीकरण हो चुका है। मोबाइल प्लेटफॉर्म तथा उपकरणों पर भी हिन्दी सुलभ होती जा रही है। आप देखेंगे कि कुल मिलाकर हिन्दी कम्प्यूटिंग का अब तक का विकास सन्तोषजनक है तथा भविष्य सही दिशा में हैं। कम्प्यूटर, लैपटॉप, स्मार्टफोन तथा टैबलेट आदि डिजिटल उपकरण हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुके हैं। आजकल लगभग इन सभी उपकरणों में हिन्दी में काम करना सम्भव है। भाषाई समर्थन ने तकनीकी विभाजन की दूरी के साथ-साथ भाषाई दूरी को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत में यूनिकोड सिस्टम ने हिन्दी को सभी कम्प्यूटिंग डिवाइस तक पहुंचा दिया है। यूनिकोड सिस्टम के कारण कम्प्यूटर पर हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में काम करना अंग्रेजी जैसा ही सरल हो गया है। इसी कारण अब इंटरनेट पर हिन्दी चिट्ठा तथा वेबसाइटों की भरमार है। विभिन्न वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्रो आदि में हिंदी भाषा में कार्य किया जा रहा है।

ऑपरेटिंग सिस्टम की बात करें तो माइक्रोसॉफ्ट विण्डोज, लिनक्स तथा ऐपल के मैक ओएस आदि डॅस्कटॉप ऑपरेटिंग सिस्टम के अतिरिक्त ऍण्ड्रॉइड जैसे मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम में भी इण्डिक यूनिकोड आ गया है। कम्प्यूटर पर माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस, लिब्रेऑफिस, उबंटू इत्यादि में भारतीय भाषाओं मै ठीक उसी तरह काम किया जा सकता है जैसे अंग्रेजी में। फलस्वरूप कम्प्यूटर पर भारतीय भाषाएं अब केवल टाइपिंग तक सीमित न रहकर शोर्टिंग, इंडेक्सिंग, सर्च, मेल मर्ज, हैडर-फुटर, फुटनोट्स, टिप्पणियाँ (कर्मेट) आदि सब कम्प्यूटरी कार्यों में सक्षम हो गई है। यहाँ तक कि आप फाइलों के नाम भी हिन्दी (या किसी अन्य भारतीय भाषा) में दे सकते हैं।

राजभाषा हिंदी का भविष्य:

आज हिंदी दुनिया की सशक्त एवं समर्थ भाषाओं में शामिल है। इसके बोलने वालों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। इंटरनेट की दुनिया में हिंदी को आगे बढ़ाने में यूनिकोड ने अहम भूमिका निभाई है। जिसके जरिए दुर्गम गांव से लेकर शहरों तक के विद्यार्थी आज हिंदी भाषा में इंटरनेट पर जान की खोज कर सकते है। अंग्रेजी, मेंडरिन और स्पेनिश के साथ-साथ सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हिंदी ही है।

इतने में हमें खुश नहीं होना हैं क्योंकि भारत देश में आज भी कोई अंग्रेजी बोलता है तो उसको प्राथमिकता और हिंदी भाषी को द्वितीय स्थान दिया जाता है। इससे हमें सबक लेना होगा कि भारत देश में हमें हिंदी को प्राथमिकता देनी होगी। कई सारे अंग्रेजी परस्तहमेशा यही दलील देते हैं कि अंग्रेजी भाषा के बिना ज्ञान-विज्ञान और विकास संभव नहीं है। उनको यह सोचना चाहिए कि रूस, जर्मनी, जापान और चीन जैसे देश अपनी मातृभाषा में ही ज्ञान, विज्ञान, अनुसंधान और विकास किए जा रहे है। हमें भाषायी द्वेष भूलकर, अन्य देशों की तरह राजकीय हिंदी भाषा को हमारी ज्ञान, विज्ञान, अनुसंधान एंव विकास की भाषा बनाना है। बाकी वैश्विक एकता के सूत्र तो हमारे इतिहास, वेद, पुराणों और ग्रंथों में नस-नस में भरे पड़े है। हमें उन लोगों को हिंदी में रुचि रखने और ज्ञान-विज्ञान को साझा करने पर बल देना है। हिंदी ही एकमात्र भाषा है जो वैश्विक एकता बनाए रखते हुए अपनी संस्कृति का संवर्धन कर सकती है।

गणेश दत्तु काळघुगे
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
विज्ञान प्रसार, नोएडा

हमारी प्रिय मित्र किताब

जैसा कि हम सभी को याद है कि हमारे बचपन में कोई यंत्र (गैजेट) नहीं होते थे, लेकिन किताबें न सिर्फ कहानियों के बल्कि ज्ञान की बहुत बड़ी व अहम स्रोत थी। कितबे आसानी से लोगों के हाथों में देखी जा सकती थी। पुस्तकें वास्तव में बहुमूल्य और ज्ञान से भरपूर मानी जाती थीं। किताबें पढ़ना इंसान के मन के लिए बहुत फायदेमंद होता है। जैसे मानव शरीर को स्वस्थ और फिट रहने के लिए व्यायाम करने की आवश्यकता होती है ठीक वैसे ही दिमाग को भी स्वस्थ और फिट रहने के लिए व्यायाम की आवश्यकता होती है, इसलिए किताब पढ़ना मन के लिए व्यायाम की तरह है। इंसान के मन पर अध्ययन करने से पता चलता है कि किताब पढ़ने से इंसान के मन व बुद्धि पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। यह वैज्ञानिक दृष्टि से सिद्ध है कि जब हम किताब पढ़ते हैं तो मन अलग तरह से काम करता है, जैसे मनुष्य कोई शारीरिक गतिविधि (व्यायाम) करते समय करता है।

इन दिनों हर कोई इंटरनेट का उपयोग उन चीजों के लिए करता है जिन्हें वे नहीं जानते हैं। यहां तक कि बच्चे भी अक्सर इंटरनेट का उपयोग उन चीजों के लिए करते हैं जिन्हें वे जानना चाहते हैं जैसे - पाठ्यक्रम से संबंधित अध्ययन या किसी भी तरह की नई अवधारणा / व्यक्ति / इतिहास / नई प्रवृत्तियों इत्यादि। यहां तक कि दिशाओं/रास्तों के बारे में जानने के लिए इंटरनेट पर निर्भर हैं। लेकिन सब कुछ इंटरनेट पर उपलब्ध नहीं है। जो हमें इंटरनेट पर नहीं मिल सकता या किसी भी चीज के बारे में अधूरा ज्ञान। लेकिन यह किताबों में उपलब्ध होता है। अगर हम किताबे पढ़ना शुरू करते हैं तो हम किसी भी विषयों के बारे में अधिक व्यापक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। यदि सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए तो इंटरनेट मददगार है और इसके कुछ फायदे हैं। लेकिन मानव जीवन में इसके बहुत सारे बुरे प्रभाव भी है, जो किसी न किसी तरह से मानव मन व बुद्धि को विकलांग बनाता जा रहा है क्योंकि वे कृत्रिम बुद्धि का इतना अधिक उपयोग करते हैं कि वे मनुष्यों के जीवित रहने के लिए आवश्यक बुनियादी ज्ञान/बुद्धि को भूल गए हैं।

किताबें पढ़ने से लोगों को निजी/ व्यस्त जीवन की समस्याओं से निपटने के लिए बुनियादी ज्ञान/बुद्धि प्राप्त करने में मदद मिल सकती है। एक बच्चे के रूप में किताबें पढ़ना शुरू करना सबसे बेहतर व फायदेमंद माना गया है। लेकिन आप किताब पढ़ना उस दिन से शुरू करते हैं जब आपको वास्तव में किताब पढ़ने के लाभों का एहसास होता है, तो ऐसी अच्छी आदत को अपनाने में कभी देर नहीं होती।

किताबें पढ़ने के कुछ निश्चित लाभ हैं। एक बढ़ते हुए बच्चे के लिए बड़े होने के दौरान किताब पढ़ने की आदत और वयस्कों के जीवन व्यतीत करने के लिए और किसी भी बुनियादी कार्य को पूरा करने के लिए अच्छी स्मरण शक्ति और एकाग्रता शक्ति होना बहुत फायदेमंद है। अगर हम बच्चों में बचपन से ही किताबें पढ़ने की आदत डालना शुरू कर दें तो यह उनके बचपन के लिए अच्छा होगा और बड़े होने के बाद भी मददगार होगा। कुछ बच्चे किताबें नहीं पढ़ पाते हैं। वे केवल वीडियो प्रक्षेपण या नाटकीयता की सहायता से चीजों को समझते हैं। किताबें पढ़ने की आदत डालने के लिए हम कहानी की किताबें पढ़ने से शुरुआत कर सकते हैं, क्योंकि बच्चे किसी ज्ञान या शैक्षिक पाठ्यक्रम की किताबों से कहीं ज्यादा कहानी की किताबों रुचि में लेते हैं। हमें कहानी या कविता की किताबों से शुरुआत करनी चाहिए। जो कई तरह से मददगार भी हो सकती है। माता-पिता को भी अपने बच्चों के साथ अच्छी आदत बनाने के लिए किताबें पढ़ना शुरू कर देना चाहिए जो भविष्य में उनके काम आ सकती है, क्योंकि बच्चे अपने माता-पिता की नकल करने के बाद ज्यादा तेजी से सीखते हैं। अध्ययन में यह भी सिद्ध हुआ है कि माता-पिता को अपने बच्चों के साथ किताब पढ़ना चाहिए। इससे उनके बच्चों को किताबों और विभिन्न प्रकार के विषयों में रुचि लेने में सहायक हो सकती है। इसके साथ ही यह उनके बच्चे के लिए स्कूल में बेहतर प्रदर्शन करने में भी मददगार हो सकता है।

किताब पढ़ना बच्चों के लिए सबसे स्वास्थ्यप्रद आदत है.....

बाल मनोविज्ञान के अनुसार बच्चे अपने आसपास के लोगों से सीखते हैं, सोचते हैं, बातचीत करते हैं और दोस्त बनाते हैं, भावनाओं को समझते हैं और अपने स्वयं के विकासशील व्यक्तित्व, स्वभाव और कौशल, भावनात्मक रूप से प्रतिक्रिया करते हैं।

रिंकि गौड़
राष्ट्रीय होटल प्रबंध केटरिंग टेक्नोलॉजी परिषद्
सेक्टर – 62 , नोएडा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नोएडा के तत्वाधान में वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नोएडा के सौजन्य से हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता 16 दिसंबर 2022 को आयोजित की गई।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) नोएडा
43 वीं बैठक का आयोजन
7 सितम्बर 2022 (बुधवार)
सौजन्य से : राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
सभागार, ए-50, सेक्टर-62, नोएडा